04 - उद्धव और पवार की असली पार्टी पर मुहर लगाई

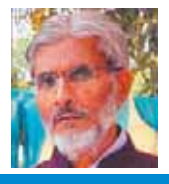
05 - रायबरेली में राहुल के लिए 'पहला प्यार' मां सोनिया से भी बड़ा

A Daily News Magazine

इंदौर

गुरुवार, 6 जून, 2024

06- हटवाया अतिक्रमण, अवैध कब्जाधारियों पर किया जुर्माना

07- जन अभियान परिषद् ने पौधा लगाकर विश्व...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 229, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

मोदी के लिए नीतिश और नायडू को साथ रखना बड़ी चुनौती

नरेंद्र मोदी तीसरे कार्यकाल में कब तक प्रधानमंत्री रहेंगे और किस तेवर के साथ काम करेंगे, यह अब नीतिश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पर निर्भर करेगा। पिछले दो बार से केंद्र में बीजेपी को अपने दम पर बहुमत मिल रहा था लेकिन इस बार किसी तरह एनडीए को मिला है। ऐसे में मोदी को अपने कई एजेंडे किनारे रखने पड़ सकते हैं। बीजेपी को 240 सीटों पर जीत मिली है और बहुमत के लिए 272 का आँकड़ा चाहिए। हालांकि एनडीए को 293 सीटें मिली हैं और यह सरकार बनाने के लिए पर्याप्त है।

चंद्रबाबू नायडू की तेलगू देशम पार्टी और नीतिश कुमार की जनता दल यूनाइटेड ने मिल कर 28 सीटें जीती हैं और एनडीए को बहुमत के आँकड़े तक ले गई हैं। वहीं इंडिया गठबंधन बहुमत से 40 सीटें पीछे रह गया है। नरेंद्र मोदी के लिए ये स्थिति बहुत सहज नहीं है, बतौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने पहले दो कार्यकाल में काफ़ी मज़बूत स्थिति में थे।

नरेंद्र मोदी के पास गठबंधन सरकार चलाने का अनुभव भी नहीं है। गुजरात में जब वह मुख्यमंत्री थे, तब भी प्रचंड बहुमत वाली सरकार थी। हक़ीक़त यह है कि बीजेपी की कमान मोदी के पास आने के बाद से एनडीए का कुनबा छोटा होता गया। अकाली दल और शिव सेना बीजेपी के दशकों पुराने सहयोगी रहे थे लेकिन दोनों कब का अलग हो चुके हैं।

इस बार जब नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे तो उन्हें सरकार चलाने के लिए सबको साथ लेकर चलना होगा। उनके सामने सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी और चुनौती होगी, चंद्रबाबू नायडू और नीतिश कुमार को अपने साथ लेकर चलना। नरेंद्र मोदी के दिल्ली आने के बाद नीतिश कुमार और नायडू के संबंध बीजेपी से बहुत कड़वाहट भरे भी रहे हैं।

नायडू और नीतिश 2014 में नरेंद्र मोदी के पहली बार प्रधानमंत्री बनने पर बीजेपी के विरोधी खेमे में रह चुके हैं और इस लोकसभा चुनाव से ठीक पहले एनडीए में वापसी की है।

जब मंगलवार की देर शाम नरेंद्र मोदी ने बीजेपी मुख्यालय से अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों को संबोधित किया तो वहाँ उन्होंने ख़ासतौर पर एनडीए की इस जीत में चंद्रबाबू नायडू की आंध्र में बड़ी जीत और नीतिश कुमार की बिहार में जीत का ज़िक्र किया।

मंगलवार की शाम को जेडीयू के वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने ये ज़रूर कहा कि 'हम एनडीए के साथ थे और एनडीए के साथ ही आगे भी रहेंगे।' जब गुजरात में साल 2002 में दंगे हुए थे तो चंद्रबाबू नायडू एनडीए के पहले ऐसे नेता थे, जिन्होंने बतौर मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के इस्तीफ़े की मांग की थी। अप्रैल 2002 में टीडीपी ने मोदी के खिलाफ़ हिंसा को रोकने और सांप्रदायिक दंगों के पीड़ितों को राहत देने में में बुरी तरह फेल होने को लेकर एक प्रस्ताव भी पारित किया था।

इसी दौरान अमित शाह ने भी एक भाषण दिया था, जिसमें उन्होंने चंद्रबाबू नायडू को 'अवसरवादी' बताते हुए कहा था कि 'एनडीए के दरवाज़े उनके लिए हमेशा बंद हैं।' लेकिन टीडीपी की गठबंधन में वापसी साल 2024 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले हो गई।

साल 2018 में चंद्रबाबू नायडू ने आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर एनडीए का साथ छोड़ दिया था और केंद्र में अपने दो मंत्रियों को भी हटा दिया। नायडू उस समय मोदी सरकार के खिलाफ़ सदन में अविश्वास प्रस्ताव लाए थे। ये अविश्वास प्रस्ताव तो पास नहीं हो पाया लेकिन अपने 16 सांसदों के साथ एनडीए से निकल गए थे। लेकिन आज वो एनडीए के साथ हैं और मोदी के तीसरी बार सत्ता में काबिज़ होने में बड़े मददगार होंगे।

इसी तरह नीतिश कुमार ने जब साल 2013 में एनडीए छोड़ा तो उसकी वजह नरेंद्र मोदी ही थे। तब बीजेपी ने नरेंद्र मोदी को अपने चुनावी अभियान का प्रमुख ही बनाया था। लेकिन नीतिश को अंदाज़ा हो गया था कि बीजेपी पीएम पद का उम्मीदवार उन्हें ही बनाएगी। नीतिश कुमार को यह बिल्कुल पसंद नहीं था।

नीतिश कुमार को लगता था कि वह मोदी के नेतृत्व में एनडीए में रहे तो उनके मुस्लिम वोटर अलग हो जाएंगे। 2014 के लोकसभा चुनाव में नीतिश कुमार की पार्टी बिहार में अकेले ही मैदान में उतरी थी लेकिन दो सीटों पर सिमट गई थी। दो साल बाद नीतिश फिर एनडीए में आ गए थे और 2019 के लोकसभा चुनाव में बिहार की 40 में से 39 सीटों पर एनडीए को जीत मिली थी।

2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में नीतिश कुमार की जेडीयू बिहार में तीसरे नंबर की पार्टी बनी लेकिन एनडीए की सरकार में वो मुख्यमंत्री बनें। फिर 2022 में नीतिश आरजेडी के साथ आ गए। लेकिन इस साल जनवरी में वो एक बार फिर पाला बदल बीजेपी के साथ आ गए। नीतिश कुमार का गठबंधन बदलना भारत की राजनीति में ऐसी प्रक्रिया बन गई है, जो हैरान नहीं करती लेकिन सस्पेंस बरकरार रहता है कि वो किसे कब किंग की भूमिका में ला दें। अब 12 सीटों के साथ नीतिश को अपने साथ बनाए रखना नरेंद्र मोदी के लिए चैलेंज होगा।

विपक्ष के पास एक उम्मीद है कि बीजेपी के ये दो दल साइड बदल सकते हैं और यही बीजेपी के लिए चिंता भी होगी। रेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में कई ऐसे एजेंडे थे, जिन्हें गठबंधन वाली सरकार में पूरा करना आसान नहीं होगा।

जैसे नीतिश और चंद्रबाबू नायडू वन नेशन वन इलेक्शन, समान नागरिक संहिता और पीएसयू में विनिवेश पर शायद ही तैयार हों। नरेंद्र मोदी आक्रामक आर्थिक नीतियां भी इन दोनों की सहमति के बिना लागू नहीं कर सकते हैं। एनआरसी और सीएए को लेकर भी विरोध बढ़ सकता है। नरेंद्र मोदी के पास अटल बिहारी वाजपेयी वाला अनुभव नहीं है। वाजपेयी ने दर्जन भर से ज़्यादा पार्टियों को साथ लेकर एनडीए की सरकार चलाई थी और बीजेपी को हार्ड कोर एजेंडा किनारे रखना पड़ा था। ऐसे में नरेंद्र मोदी के पास दो विकल्प होंगे। पहला यह कि अपने एजेंडा किनारे रखें और दूसरा कि साझे एजेंडे पर आगे बढ़ें।

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित रिपोर्ट के संपादित अंश)

उत्तरकाशी में बड़ा हादसा

ठंड से 5 ट्रैकर्स की मौत

4 अभी भी फंसे, 13 का रेस्क्यू किया गया,मौसम खराब होने से ऑपरेशन में दिक्कत

उत्तरकाशी (एजेंसी)। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में 4400 मीटर की ऊंचाई पर मौजूद सहस्त्रताल ट्रैकिंग रूट पर गए 22 सदस्यों के दल में से 5 सदस्यों की ठंड से मौत हो गई। दल के 13 सदस्यों को रेस्क्यू किया गया है। फंसे हुए 4 ट्रैकर्स के लिए रेस्क्यू जारी है, लेकिन मौसम खराब होने से ऑपरेशन में दिक्कत आ रही है। दल में 18 ट्रैकर्स कर्नाटक, एक महाराष्ट्र और बाकी के तीन लोकल गाइड हैं। घटना में मरने वाले 5 लोगों के शव भी रेस्क्यू के बाद नटीन हेलीपेड लाए गए, जिन लोगों को सुरक्षित निकाला गया है उनमें से 8 को हेलीकॉप्टर के जरिए देहरादून के अस्पताल में भेजा गया है। साथ ही 3 लोगों को नटिन भटवाड़ी के अस्पताल में एडमिट कराया गया है। 2 लोगों की हालत स्थिर है। उत्तरकाशी के एसपी अर्पण यदुवंशी ने बताया कि ट्रैकिंग एसोसिएशन ने ग्रुप के सहस्त्रताल में फंसने की जानकारी 4 जून की शाम को दी थी। इसके बाद से ही रेस्क्यू जारी है। इसमें एनडीआरएफ उत्तराखंड पुलिस, वन विभाग, एयरफोर्स, आपदा प्रबंधन की टीम और सिल्ला गांव के लोग शामिल हैं। टिहरी जिले से भी पुलिस और वन विभाग का दल घटनास्थल के लिए भेजा गया है। एमआई-17 हेलीकॉप्टर के साथ एक टीम को बैकअप में रखा गया है। दरअसल 29 मई को एक 22 सदस्य ट्रैकिंग दल सहस्त्रताल ट्रैक पर गया था। यह दल मल्ला-सिल्ला से कुश कुल्याण बुग्याल होते हुए सहस्त्रताल की ट्रैकिंग के लिए निकला था। इस ट्रैकिंग दल को 7 जून तक लौटना था। वापसी के दौरान दल 2 जून को कोखली टॉप बेस कैंप पहुंचा। 3 जून को सभी सहस्त्रताल के लिए रवाना हुए। इसी दौरान अचानक मौसम खराब हुआ। बर्फबारी शुरू हो गई। घना कोहरा छा गया। इससे यह दल रास्ता भटक गया

म.प्र. में भाजपा की रिकॉर्ड जीत

शिवराज को मिठाई खिलाकर बोले सीएम यादव -

भाई साहब, तो अब दिल्ली जा रहे हैं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में सभी 29 लोकसभा सीटों पर बीजेपी को रिकॉर्ड जीत मिली। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान बुधवार सुबह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मिलने सीएम हाउस पहुंचे। दोनों ने एक-दूसरे का मुंह मीठा कराया। डॉ. मोहन यादव ने कहा, 'भाई साहब तो अब दिल्ली जा रहे हैं।

वहीं, एक न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में शिवराज ने कहा- एनडीए लगातार तीसरी बार 300 के पास पहुंचा है। कितनी बार ऐसा हुआ है? आंकड़े स्पष्ट बहुमत और जनादेश को प्रदर्शित कर रहे हैं। लोकतंत्र में कहीं सीटें घटती हैं, कहीं बढ़ती हैं। कई राज्यों में हमने क्लीन स्वीप किया है। सही अर्थों में बीजेपी अखिल भारतीय पार्टी है। हर राज्य में हमारी प्रभावी उपस्थिति है।

शिवराज ने कहा, जनादेश एनडीए को मिला है। मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए मिला है। मुझे सांसद की जिम्मेदारी मिली है। इसे पूरी निष्ठा से निभाऊंगा।

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने हार की जिम्मेदारी ली

इधर, पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने हार की जिम्मेदारी लेते हुए कांग्रेस को एकजुट रहकर तैयार करने की बात कही। वहीं मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने एक कार्यक्रम में कहा- इंदौर से भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी की रिकॉर्ड जीत का श्रेय ऐन मौके पर नाम वापस लेने वाले कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय कांति बम को भी जाता है।

सुप्रभात

स्वागत में गोरी

ढूँठ सी खड़ी
धरती के पाँव
बिवाईयां पड़ी
मांदल , बजाओजी...
पंछियों के घोंसले
औंधे लटके हैं
पेड़ों के गात पात
हवा में भटके हैं
बिजुरी ,चमकाओजी...
किसको सुनाए अब
अपनी कहानी
होरी की आँख का
सूख रहा पानी
बूंदन,बरसाओजी...
आओजी ,
मेघ तुम आओजी...।

- अरुण सातले

सीएम नवीन पटनायक ने राज्यपाल को सौंपा इस्तीफा

- **ओडिशा में 24 साल बाद बीजेडी राज खत्म, भाजपा पहली बार अकेले बनाएगी सरकार**

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओडिशा में बीजेडी अध्यक्ष नवीन पटनायक ने बुधवार को सीएम पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने भुवनेश्वर में राजभवन जाकर राज्यपाल रघुवर दास को अपना इस्तीफा सौंपा। पटनायक पिछले 24 साल से राज्य के मुख्यमंत्री थे। मंगलवार 4 जून को लोकसभा चुनाव के साथ ओडिशा और आंध्र प्रदेश में विधानसभा चुनाव के नतीजे भी आए। दोनों राज्यों में मौजूदा सरकारों को सत्ता गंवानी पड़ी। ओडिशा में बीजेपी को 147 में से 78, तो बीजेडी को 51 सीटें मिलीं। राज्य में भाजपा पहली बार पूर्ण बहुमत से अकेले सरकार बनाएगी। भाजपा ने अब तक मुख्यमंत्री की घोषणा नहीं की है। पार्टी ने पीएम नरेंद्र मोदी के चेहरे पर ही चुनाव लड़ा। बहुत जल्द भाजपा नई सरकार बनाने का दावा पेश कर सकती है। ओडिशा में बीजेडी साल 2000 से लगातार सत्ता में रही। बीजेडी अध्यक्ष नवीन पटनायक 24 साल से मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने 5 मार्च 2000 को पहली बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। तब से 2019 तक वे 5 बार से ओडिशा के सीएम हैं।

लोकसभा चुनाव नतीजों के बाद पीएम मोदी का इस्तीफा

राष्ट्रपति ने किया स्वीकार,नई सरकार के गठन तक जिम्मेदारी संभालने को कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय मंत्रिपरिषद के साथ अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। 4 जून को लोकसभा चुनाव के नतीजे सामने आने के बाद बुधवार को ये सियासी घटनाक्रम हुआ। प्रधानमंत्री राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलने पहुंचे और अपना इस्तीफा सौंप दिया। प्रेसीडेंट ने इसे स्वीकार कर लिया। राष्ट्रपति भवन की ओर से इस बात की जानकारी दी गई है। राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्मू ने पीएम मोदी का इस्तीफा स्वीकार करने के साथ ही उन्हें नई सरकार के गठन तक कार्यभार संभालने को कहा है। खबर ये भी आ रही कि एनडीए की नई सरकार का शपथ ग्रहण 8 जून को होगा। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद से ही राजधानी दिल्ली में राजनीतिक हलचल लगातार जारी है। बुधवार को दिल्ली में एनडीए और विपक्षी इंडिया गठबंधन के दल अलग-अलग बैठक हुई। इस दौरान एनडीए की बैठक में नई सरकार के गठन को लेकर चर्चा हुई। बताया जा रहा कि एनडीए गठबंधन के नेता के तौर पर नरेंद्र मोदी 8 जून को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। इसी बीच राष्ट्रपति भवन की ओर से बुधवार को बताया गया कि पीएम मोदी ने प्रेसीडेंट द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। प्रधानमंत्री ने केंद्रीय मंत्रिपरिषद के साथ अपना इस्तीफा सौंप दिया। राष्ट्रपति ने इस्तीफा स्वीकार कर लिया और प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्रिपरिषद से नई सरकार बनने तक पद पर बने रहने का अनुरोध किया। इससे पहले बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में पीएम आवास पर हुई बैठक में वर्तमान लोकसभा को भंग करने की सिफारिश को मंजूरी दे दी गई।

'सरकार तो अब बनेगी ही' नीतिश का ऐलान

लेकिन किसकी...सस्पेंस बना गए जेडीयू चीफ

पटना (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 में एनडीए को मिली जीत के बाद अब बैठकों का दौर शुरू हो गया है। बुधवार को दिल्ली में बीजेपी की ओर से एनडीए की बैठक बुलाई गई है। इस बैठक में शामिल होने के लिए बिहार के मुख्यमंत्री और जेडीयू चीफ नीतिश कुमार फ्लाइट से दिल्ली पहुंच गए। नीतिश कुमार और तेजस्वी यादव एक ही फ्लाइट से दिल्ली पहुंचे हैं। बता दें, इंडिया गठबंधन ने भी बुधवार को मीटिंग की है। दिल्ली पहुंचे सीएम नीतिश कुमार ने एयरपोर्ट के बाहर मीडिया से बात करते हुए बड़ा बयान दे दिया। नीतिश कुमार ने कहा- सरकार तो अब बनेगी ही। किसकी सरकार बनेगी। इस पर नीतिश कुमार मुस्कुराए और गाड़ी में बैठकर चले गए। नीतिश कुमार के साथ जेडीयू के राज्यसभा सांसद संजय झा भी थे। एनडीए की बैठक से पहले जेडीयू सांसद संजय झा ने कहा, हम एनडीए के साथ हैं। नीतिश जी आज बैठक में जाएंगे। बिहार की जनता ने एनडीए को बिहार में बड़ा जनादेश दिया है। सूत्रों से पता चलता है कि सीएम नीतिश कुमार राष्ट्रपति को अपना समर्थन पत्र सौंपने की योजना बना रहे हैं। इधर तेजस्वी यादव भी दिल्ली पहुंच चुके हैं। तेजस्वी यादव पटना से फ्लाइट में नीतिश कुमार के साथ चले थे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 44.5 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ गुरुवार, 6 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

राजस्थान में गहलोत के इलाके में ही पिछड़ी कांग्रेस

- पूर्वी राजस्थान और शेखावाटी एरिया में सबसे ज्यादा फायदा

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में भाजपा हैट्रिक बनाने से चूक गई। 25 लोकसभा सीटों में से भाजपा को 14 सीट पर जीत मिली। कांग्रेस ने 10 साल बाद खाता खोला। इंडिया गठबंधन 11 सीट पर जीता। भाजपा को पिछले चुनाव के मुकाबले 11 सीटों का नुकसान झेलना पड़ा है। वहीं कांग्रेस और गठबंधन दल को 11 सीटों का फायदा हुआ। कांग्रेस को पूर्वी राजस्थान और शेखावाटी एरिया में सबसे ज्यादा फायदा मिला है। लोकसभा चुनाव को यदि विधानसभा सीटों

के नजरिए से देखें तो 200 विधानसभा सीटों में से भाजपा ने 106 और कांग्रेस गठबंधन ने 89 सीटों पर बढ़त बनाई है। विधानसभा चुनाव के छह महीने में ही 8 सीटों पर भाजपा ने बढ़त खो दी। विधानसभा चुनाव में भाजपा को 115 सीट मिली थी। वहीं, कांग्रेस गठबंधन ने 15 सीटों पर बढ़त हासिल की है। 2023 में गठबंधन में शामिल कांग्रेस सहित अन्य पार्टियों को मिलाकर 74 सीटें मिली थीं। बाड़मेर लोकसभा क्षेत्र में आने वाली 8 विधानसभा सीटों में से एक पर भी भाजपा बढ़त नहीं बना पाई।

हरियाणा के एक बूथ पर वोटों से ज्यादा मतदान

- मंत्री बोले-गड़बड़ी हुई वर्ना मेरे हलके से बीजेपी जीत जाती, अफसर जवाब नहीं दे सके

हिसार (एजेंसी)। हरियाणा की हिसार लोकसभा सीट के अंतर्गत आने वाली बवानीखेड़ा विधानसभा के 74 नंबर बूथ की ईवीएम को लेकर घमासान मचा है। इस बूथ पर तैनात प्रिसाइडिंग अफसर की गलती की वजह से बूथ पर डाले गए वोटों को रद्द करना पड़ा। इसी वजह से इस बूथ का रिजल्ट जारी नहीं किया गया। दरअसल, 25 जून को वोटिंग शुरू होने से पहले कराए गए मॉक पोल को डिलीट कराए बिना ही प्रिसाइडिंग अफसर ने

वोटिंग शुरू करवा दी। 4 जून को काउंटिंग के दिन ईवीएम खोली गई तो यहां वोट पोल, बूथ के कुल वोट से ज्यादा मिले। अधिकारियों ने इसकी जांच की तो पता चला कि मॉक पोल को रद्द कराए बिना ही मतदान करवा दिया गया। बूथ का रिजल्ट जारी नहीं होने पर बवानीखेड़ा से भाजपा विधायक और मंत्री बिशम्बर वाल्मीकि ने हरियाणा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को लेटर लिखा है। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी की जीत हुई है, लेकिन अधिकारी ईवीएम का रिजल्ट जारी नहीं कर रहे।

नवनिर्वाचित सांसद दर्शनसिंह ने शिवालय पर की पूजा अर्चना, कहा मैं कार्यकर्ताओं के लिए सदैव उपलब्ध

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

मैं भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए आधी रात को भी उपलब्ध रहूंगा । मैं काला कांच चढ़ाकर जाने वाला नेता नहीं हूं। पहले भी क्षेत्र में काम किया है। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में क्षेत्र का विकास आगे बढ़ाना है। उक्त बात नव निर्वाचित सांसद दर्शन सिंह ने सांसद निर्वाचित होने के बाद प्रथम नगरागमन के अवसर पर मुख्य बाजार में भाजपा कार्यकर्ताओं एवं मतदाताओं के बीच आभार सभा में कहें। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, भाजपा जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल, विधायक विजयपाल सिंह,पिपरिया विधायक ठाकुर दास नागवंशी, जिला पंचायत सदस्य

उमेश यादव ,नप अध्यक्षता लता यशवंत पटैल आदि मंचासीन थे। आपने आगे कहा कि मैंने पहले ही कह दिया था मध्यप्रदेश में कांग्रेस का सूपड़ा साफ होने वाला है। विधायक विजयपाल सिंह ने कहा मुझे खुशी है इस बार सोहागपुर नगर ने 3 हजार की बढ़त दी। वहीं सोहागपुर ब्लॉक से भी भाजपा को अधिक वोट मिले हैं। विधायक ने विधानसभा के क्षेत्र के मतदाताओं का आभार व्यक्त किया । आपने अंत में कहा अब दो सांसद इस मंच पर है अगर पार्टी ने चाहा तो किसी एक को लालबत्ती मिल सकती है। कार्यस्त्र5म का संचालन डॉ संजीव शुक्ला ने किया। इसके पूर्व सांसद दर्शनसिंह ने राज्य मार्ग नर्मदापुरम पिपरिया पर स्थाथित शिव पार्वती मंदिर पर पूजन अर्चन की। मुख्य बाजार में कार्यकताओं किया। इसी अवसर पर जमकर आतिशबाजी जलाई गई। भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों , किसान मोर्चा, युवा मोर्चा,महिला मोर्चा, अल्प संख्यक मोर्चा सदस्यों,नागरिकों ने नव निर्वाचित सांसद का पुष्पहारों से स्वागत किया ।

जनपद पंचायत परिसर का विख्यात कुआं सफाई में उगल रहा है पोषण आहार

सुबह सवेरे सोहागपुर। जनपद पंचायत परिसर का विख्यात कुआं सफाई में उगल रहा है पोषण आहार। उल्लेखनीय है कि जल संवर्धन अभियान के तहत जनपद पंचायत के कुएं की सफाई की जा रही थी। इस अवसर पर भाजपा के अश्विनि सरोज वहां जा पहुंचे। वहां इस सफाई अभियान में महिला बाल विकास विभाग का कारनामा पोषण आहार और छोटे बच्चों को दिया जाने वाले मिल्क की गई पाउडर की बोरियां, गोलियां, आदि की गई जनपद के कुआ में खुदाई के दौरान निकली। वह आहार सड़ चुका जिसे आवारा पशु खा रहे उनके स्वास्थ को भी खतरा है। उक्त जानकारी अश्वनी सरोज नगर के समस्त सोशल मीडिया प्लेटफार्म में कई फोटो सहित डाल दिए। इसके बाद सोशल मीडिया पर महिला एवं बाल विकास विभाग की छीछालेदर टिप्पणियां की गई। बदबूदार उक्त सामग्री को नगर पंचायत परिषद के कर्मचारियों ने वहां से हटाया। उल्लेखनीय है कि महिला बाल विकास अधिकारी जस्ति तिगा लम्बे अरसे से पदस्थ हैं।

केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 19 जून तक बढ़ी

- कोर्ट ने अंतरिम जमानत याचिका खारिज की, मेडिकल टेस्ट कराने का निर्देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब नीति से जुड़े भ्रष्टाचार मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट ने बुधवार (5 मई) को अरविंद केजरीवाल की ज्यूडिशियल कस्टडी 19 जून तक बढ़ा दी। केजरीवाल को कोर्ट में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश किया गया। कोर्ट ने केजरीवाल की मेडिकल ग्राउंड पर 7 दिन की जमानत की मांग वाली अंतरिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया।

साथ ही अधिकारियों को निर्देश दिया कि केजरीवाल के जरूरी मेडिकल टेस्ट कराएं। स्पेशल जज कावेरी बावेजा ने 1 जून की हुई सुनवाई में केजरीवाल की जमानत याचिका पर फैसला 5 जून के लिए सुरक्षित रख लिया था। केजरीवाल ने 7 दिन की जमानत मांगी थी, ताकि वे अपने मेडिकल टेस्ट करवा सकें, लेकिन प्रवर्तन निदेशालय ने कोर्ट में उनकी अपील का विरोध किया था। केजरीवाल को 21 मार्च को अरेस्ट किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने 10 मई को उन्हें अंतरिम जमानत दी थी। 2 जून की शाम 5 बजे केजरीवाल ने तिहाड़ में सरेंडर किया था।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के लाइफ सांइस विभाग और विज्ञान संचार केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम 'भूमि पुर्नस्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखा प्रतिरोध क्षमता' रही। इस मौके पर 4 और 5 जून को विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनी कांत, प्रो. टी. रवि किरण बतौर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनी कांत ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रहने और इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। वहीं प्रो. टी. रवि किरण ने 'भूमि पुर्नस्थापन, मरुस्थलीकरण और सूखा प्रतिरोध क्षमता' विषय पर अतिथि व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि मरुस्थलीकरण, भूमि क्षरण और सूखा बहुत बड़ा संकट है। यह लोगों को प्रभावित करता है। चूंकि मानव जीवन को कई आवश्यक गतिविधियों के लिए उपजाऊ और उत्पादक भूमि की आवश्यकता होती है। इसलिए मरुस्थलीकरण सतत विकास के लिए

एक बड़ी बाधा है। उन्होंने सभी से खूब पौधे लगाने का आह्वान किया। इससे पूर्व 4 जून को पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण और भूमि पुर्नस्थापन के महत्व को रेखांकित करने वाले पोस्टर प्रस्तुत किए। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का अंत पर्यावरण पर एक ओपन हाउस क्विज के साथ हुआ। जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पर्यावरण संबंधित सवालों के जवाब दिए। विश्वविद्यालय के लाइफ सांइस विभाग और विज्ञान संचार केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में इस आयोजन ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व को जन-जन तक पहुंचाने और छात्रों को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और सक्रियता बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। इस अवसर पर विज्ञान संचार केंद्र के निदेशक डॉ. प्रबाल रॉय, विज्ञान संकाय की डीन डॉ. पूर्वी भारद्वाज, डॉ. अंकित अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, लाइफ सांइस के साथ अन्य प्राध्यापकगण मौजूद थे।

महाराष्ट्र में फडणवीस ने ली हार की जिम्मेदारी

डिप्टी सीएम बोले-राज्य में पार्टी का संगठन मजबूत करूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों में बीजेपी की स्थिति यूपी समेत राजस्थान, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा खराब हुई है। ऐसे में महाराष्ट्र से डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने अपने इस्तीफे का ऐलान कर दिया है। उन्होंने पार्टी की हार की जिम्मेदारी लेते हुए पद छोड़ने की पेशकश की है। फडणवीस ने आलाकमान को संदेश भेजा है कि वह संगठन में रहकर पार्टी के लिए काम करना चाहते हैं। दरअसल, बुधवार को मीडिया से बातचीत के दौरान देवेंद्र फडणवीस ने कहा है कि हमें महाविकास अघाड़ी की तीन पार्टियों के अलावा एक नेरेटिव से भी लड़ना पड़ा है। देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि मैं नेतृत्व से मांग करूंगा कि मुझे सरकार के काम से मुक्त किया जाए। देवेंद्र फडणवीस ने बीजेपी और एनडीए अलायंस की बुरी स्थिति और सीटों के नुकसान को लेकर कहा कि मैं भागने वाला आदमी नहीं हूं। इस हार की जिम्मेदारी लेता हूं।

टूट गया 'माया' जाल, यूपी में बीएसपी का हुआ बंटाढार

ना अपनी सीटें बचा सकी ना साख, जीरो रहीं सीटें

लखनऊ (एजेंसी)। इंडिया और एनडीए से दूरी बनाकर अकेले चुनाव मैदान में उतरना बसपा को बहुत भारी पड़ा। गलत निर्णय के कारण बसपा अपने अब तक के सबसे खराब दौर में पहुंच गई। एक भी सीट जीतना तो दूर, वह किसी भी सीट पर दूसरे नंबर पर नहीं रही। पार्टी का प्रदर्शन 1989 से भी खराब रहा, जब वह पहला चुनाव लड़ी थी। तब बसपा ने 9.90 फीसदी वोट हासिल किए थे और दो सीटें भी जीती थीं। इस चुनाव में बसपा को एक भी सीट नहीं

मिली और वोट प्रतिशत गिरकर 9.14 फीसदी रह गया। इस तरह बसपा न तो कोई सीट जीत सकी और न साख बचा सकी। बसपा की इस हालत की कई वजहें हैं। इनमें एक प्रमुख वजह यह है कि वह हालात और परिस्थितियों को नहीं भांप पाई। इस चुनाव में राजनीति एनडीए और इंडिया दो धड़ों में बंट गई लेकिन बसपा इसको नहीं भांप सकी।

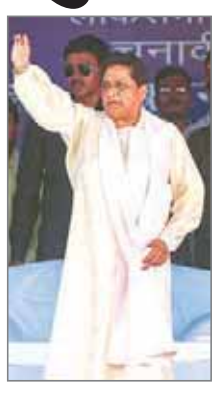

हिमाचल में बीजेपी की हैट्रिक लेकिन वोट शेयर गिरा

सीएम सुक्खू अपने क्षेत्र से लीड नहीं दिला पाए, शिमला में मंत्रियों की फौज बेकार

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल में लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जीत की हैट्रिक लगाई। हॉट सीट मंडी से कंगना रनोट, हमीरपुर से अनुराग ठाकुर, शिमला से सुरेश कश्यप, कांगड़ा से डॉ. राजीव भारद्वाज ने जीत हासिल की है। साल 2014 व 2019 के चुनाव में भी भाजपा ने चारों सीटों पर जीत दर्ज की थी। इस बार भाजपा का वोट शेयर गिरा है, जबकि कांग्रेस का बढ़ा है। इस चुनाव में आपदा

में केंद्र से आर्थिक मदद न मिलने और प्रदेश सरकार को गिराने के लिए धनबल के इस्तेमाल जैसे कांग्रेस के मुद्दे चुनाव में बेअसर साबित हुए। 6 बार के सीएम वीरभद्र सिंह के बेटे व प्रदेश सरकार में मंत्री विक्रमादित्य सिंह भी मंडी सीट पर हार को नहीं टाल पाए। मुख्यमंत्री सुक्खू भी अपने विधानसभा हलके से पार्टी कैंडीडेट को लीड नहीं दिला सके। इस चुनाव में कांग्रेस का वादा भी काम नहीं कर पाया।

राजा भैया की 'मौन साधना' ने बिगाड़ दिया बीजेपी का समीकरण!

प्रतापगढ़ और कौशांबी सीट पर इस बार सपा ने हासिल की बड़ी जीत

प्रतापगढ़ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की प्रतापगढ़ और कौशांबी लोकसभा सीट पर पूरे देश की नजर बनी हुई थी। यह इलाका कुंडा से विधायक और जनसत्ता दल के अध्यक्ष रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया का गढ़ माना जाता है। प्रतापगढ़ सीट से बीजेपी के संगम लाल गुप्ता को हार का मुंह देखना पड़ा है। पहली बार चुनाव लड़े सपा प्रत्याशी शिवपाल सिंह पटेल ने जीत हासिल की है। उन्होंने बीजेपी को 66206 वोटों से हराया। इसी तरह, दस साल बाद कौशांबी संसदीय सीट पर सपा ने एक बार फिर साइकिल में रफ्तार भर दी। सपा प्रत्याशी पुष्पेंद्र सरोज ने सीधे मुकाबले में एक लाख से अधिक वोटों के अंतर से बीजेपी के विनोद सोनकर को हैट्रिक लगाने से रोक दिया। प्रतापगढ़ और कौशांबी दोनों सीटों पर बीजेपी के हार के पीछे राजा भैया की मौन साधना को बड़ा फैक्टर माना जा रहा है।

अनुप्रिया पटेल ने राजा भैया पर साधा था निशाना

चुनाव प्रचार के अंतिम दिन अपना दल (एस) की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल कुंडा विधानसभा के मानिकपुर मिलिट्री ग्राउंड पहुंची। जनसभा में उन्होंने कौशांबी से बीजेपी प्रत्याशी विनोद सोनकर को भारी मतों से जिताने की अपील की। साथ ही राजा भैया के गढ़ कहे जाने वाले कुंडा में उनका नाम लिए बगैर टिप्पणी की। अनुप्रिया ने कहा कि राजा किसी की कोख से पैदा नहीं होते हैं, अब लोकतंत्र में ईवीएम से राजा पैदा होते हैं। अब ना कोई राजा रह गया है और ना ही कोई रानी, जिसे आप मतदाता चाहें राजा बना दें और चाहे रंक। ऐसे स्वघोषित राजाओं को जिन्हें लगता है कुंडा हमारी जागीर है। उनके इस भ्रम को तोड़ने का आप सबके पास एक बहुत बड़ा सुनहरा अवसर आ चुका है। अब मतदाता ही सर्वशक्तिमान है।

प्रतापगढ़ सीट पर ठाकुर सांसदों का रहा है दबदबा

आपको बता दें कि प्रतापगढ़ लोकसभा सीट से अभी तक 16 लोकसभा चुनाव हो चुके हैं। दो बार ब्राह्मण समाज से आने वाले मुनीश्वर दत्त उपाध्याय सांसद बने, जबकि 12 बार ठाकुर वर्ग से सांसद रहे। 1962 और 1967 में अजीत प्रताप सिंह जीते। 1971 में राजा दिनेश सिंह यहां के सांसद बने। वह वो लगातार दो बार इस सीट पर जीतकर विदेश मंत्री बने।1980 में अजीत सिंह जीतने में सफल रहे। 1984 में कांग्रेस ने फिर से दिनेश सिंह को मैदान में उतारा तो वे लगातार दो बारे जीते। 1991 में जनता दल से राजा अभय प्रताप सिंह सांसद बने।

इंदौर में नोटा को 2 लाख+ वोट के मायने क्या?

इंदौर (नप्र)। इंदौर लोकसभा सीट के चुनाव में नोटा ने इतिहास रच दिया। देश में पहली बार किसी सीट पर नोटा को 2.18 लाख वोट मिले हैं। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में बंपर वोट पड़ा है। यह अब तक हुए चुनावों में किसी भी परिणाम से ज्यादा हैं। पिछले चुनावों में नोटा को सिर्फ 5 हजार और कुछ वोट मिलते आए थे। साथ ही नतीजे ने देश में नोटा को सबसे ज्यादा वोट मिलने का बिहार का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है।

नोटा क्या होता है, कितना असरकारक..

2013 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर नोटा (उपरोक्त में से कोई नहीं) का इस्तेमाल शुरू। कोई भी प्रत्याशी पसंद नहीं तो नोटा दबा सकते हैं वोटर। चुनाव आयोग के मुताबिक, नोटा के वोट गिने जाएंगे, लेकिन इसे रद्द श्रेणी में ही रखेंगे। 100 प्रतिशत मत नोटा को आए तो ही रीपोलिंग का प्रावधान, वर्ना कोई मायने नहीं।

इंदौर के खजराना में नोटा को सबसे ज्यादा वोट- मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में नोटा को बंपर वोट मिले हैं। पूर्व मंत्री और बीजेपी विधायक महेंद्र हार्डिया की सीट इंदौर-5 में सबसे ज्यादा 53 हजार 133 वोट मिले हैं। खजराना और आजाद नगर मुस्लिम बहुत क्षेत्र आते हैं। इसके बाद सबसे ज्यादा वोट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय की सीट इंदौर 1 में 31 हजार 835 आए हैं। यहां चंदन नगर मुस्लिम क्षेत्र है।

इसके अलावा रमेश मेंदोला की सीट इंदौर 2 में 21 हजार 330 वोट, इंदौर 3 में 23 हजार 618, इंदौर 4 में 22 हजार 956, राऊ में 28 हजार 626, देपालपुर में 17 हजार 771, सांवेर में 19 हजार 086 वोट नोटा को गए हैं।

नोटा के कारण जीत का अंतर नए तरीके से निकाला गया- नोटा भी राजनीतिक तौर पर कुछ न बदल पाया हो, लेकिन वोटों के दम पर देश में वोटिंग एनालिसिस का तरीका ही बदल दिया है। देश में पहली बार किसी निकटतम प्रतिद्वंद्वी के बजाय विजेता उम्मीदवार की जीत का अंतर चुनाव आयोग ने नोटा से किया है। उदाहरण के तौर बसपा प्रत्याशी संजय सोलंकी को 50 हजार से ज्यादा वोट मिले हैं।

2 भाजपा विधायकों के क्षेत्र में नोटा को बंपर वोट

इंदौर की ऑयल मिल में आग, फ्लैट चपेट में आए

धमाकों की आवाज से घरों के कांच फूटे, गीले कंबल में लिपटकर बाहर निकले लोग

इंदौर (नप्र)। इंदौर में मंगलवार देर रात ऑयल मिल में आग लग गई। आग फैली तो पास के दो फ्लैट इसकी चपेट में आ गए। दोनों परिवारों को गीले कंबल में लपेटकर बाहर निकाला गया। आग ने भीषण रूप ले लिया, लपटें काफी दूर से दिखाई देने लगीं। 6 फायर ब्रिगेड ने कड़ी मशक्कत के बाद बुधवार सुबह तक आग पर काबू पाया। तब तक दोनों फ्लैट में रखा गृहस्थी का सामान जलकर खाक हो गया। जानकारी के अनुसार, शहर के चितावद पेट्रोल पंप के पास सिद्धि विनायक ऑयल कंपनी में रात करीब 3 बजे आग लगी थी। यह कंपनी अभिषेक गोयल की बताई जा रही है।

धमाकों की आवाज से नींद खुली, चारों तरफ धुआं था- मिल के पास अशोक डोर का परिवार रहता है। उन्होंने बताया, रात करीब 3.15 बजे धमाकों की आवाज आई। घरों के कांच फूट गए। नींद खुली तो चारों तरफ धुआं फैला था। यहीं पर एक फ्लैट में भाई का परिवार भी रहता है। आग और धुआं बढ़ रहा था। घर के सभी सदस्यों को दूसरे दरवाजे से गीले कंबल में लपेटकर 10 मिनट में बाहर निकाला।

गृहस्थी का पूरा सामान और कैश-ज्वेलरी जले- अशोक डोर ने बताया, हादसे के समय घर में पत्नी अनिता, बेटी मिकिता, बेटा हर्ष, उज्जैन से आई बेटी सोनिया और उसका 6 साल का बेटा रियांश मौजूद था। भाई के फ्लैट में भाभी शकुंतला, वर्षा, अंजलि, आनंद और शिवानी सो रहे थे। सभी सुरक्षित हैं। दोनों फ्लैट का पूरा सामान जल गया। गृहस्थी का सामान, कैश और ज्वेलरी के जलने से लाखों का नुकसान हुआ है।

मिल मालिक को कई बार समझाया, लेकिन ध्यान नहीं दिया- अशोक ने बताया, ऑयल मिल के मालिक को कई बार समझाया कि इस तरह के व्यवसाय से जान माल का खतरा रहता है। लेकिन उन्होंने ध्यान नहीं दिया। मिल में काफी मात्रा में ऑयल और केमिकल का काम होता है। यहां करीब 30 साल पहले भी आगजनी हो चुकी है।

मंत्री विजयवर्गीय ने किया कान्ह नदी का निरीक्षण

● अफसर से फोन पर पूछा- बारिश से पहले नदी की सफाई का कार्यक्रम नहीं बन रहा क्या?

इंदौर (नप्र)। लोकसभा चुनाव के परिणाम के बाद बुधवार को मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने विकास कार्यों की समीक्षा की।

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर उन्होंने पौधरोपण किया। इसके बाद उन्होंने सुबह कृष्णपुरा की छत्री के पास कान्ह नदी का निरीक्षण किया। अधिकारियों से चर्चा की और नदी के शुद्धिकरण के लिए जरूरी दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा, बारिश से पहले कान्ह नदी शुद्धिकरण और संरक्षण के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जाएंगे।

फोन पर विजयवर्गीय ने अफसरों को निर्देशित किया कि 'बारिश के पहले नदी की साफ-सफाई का कार्यक्रम नहीं बन रहा है क्या। नदी में गंदगी है। मुझे लगता है कि बारिश के पहले यदि इसकी सफाई नहीं करवाई गई तो निचली बस्तियों में पानी भरेगा। मैं सुबह पौधारोपण करने आया था। उसके बाद इधर आकर देखा तो यहां काफी गंदगी है। विधायक गोलू शुक्ला आपसे बात करेंगे। सफाई जरूरी है।'

तीन चोरों से एक करोड़ का माल बरामद

● डेढ़ किग्रा सोना, पांच किग्रा चांदी, बोलेरो, तीन लाख मिले

इंदौर (नप्र)। इंदौर की तेजाजी नगर पुलिस ने एक बार फिर तीन चोरों को पकड़कर उनसे करीब 1 करोड़ से अधिक की चोरियों का खुलासा किया है। आरोपियों के पास से चोरी का माल भी बरामद किया है। जो उन्होंने छिपाकर रखा था। इस मामले में एक व्यापारी को भी आरोपी बनाने की बात सामने आ रही है। पुलिस अफसर इस मामले में जल्द खुलासा करेंगे। तेजाजी नगर पुलिस ने पूर्व में लाखों की चोरियों को खुलासा किया था। इस मामले में करण सिंह और वेल सिंह उर्फ एलसिंह को पकड़ा था। आरोपियों को जब्ती के बाद जेल भेजा गया। बाद में उन्हें रिमांड पर लाकर पूछताछ की गई। उन्होंने अपने साथी ठाकुर अलावा, विकास माहेश्वरी और अशोक मांझी को पकड़ा। उन्होंने कई चोरियां कबूल की है।

आधा दर्जन चोरियां, 1 करोड़ से ज्यादा माल- आरोपियों के पास से करीब आधा दर्जन से ज्यादा चोरियों की वारदातें मिली है। जो तेजाजी नगर, गांधीनगर, एरोड्रम सहित पांच थाना इलाकों में की गई थी। आरोपियों से अभी तक 55 लाख से ज्यादा का माल जब्त हो चुका है। पुलिस ने दो साथियों को फरार बताया है। जिनकी जल्द गिरफ्तारी की जाएगी।

अंतरराज्यीय चोरों से इतना माल जब्त- आरोपियों के पास से तेजाजी नगर पुलिस ने करीब डेढ़ किलो सोना, पांच किलो चांदी, तीन लाख रुपए नकदी और एक बोलरो गाड़ी बरामद की है। आरोपी इसी गाड़ी से चोरी की वारदातें करते और फिर फरार हो जाते थे। आरोपियों ने इंदौर के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के शहरों में भी चोरी की वारदातें की है।

इंदौर डिफेंस एकेडमी के दो टीचर्स पर केस

पानी में घोलकर पावडर पिलाने से बिगड़ी तबीयत तीन अस्पतालों में हुआ उपचार

इंदौर (नप्र)। इंदौर की बेटमा पुलिस ने डिफेंस एकेडमी के दो प्रोफेसरों पर गलत दवा देने के मामले में केस दर्ज किया है। वहां पढ़ने वाले स्टूडेंट ने आरोप लगाया कि अग्निवीर एग्जाम के रिजल्ट में फेल होने से उसकी तबीयत ठीक नहीं लग रही थी। वहां के दो टीचर्स ने पानी में पावडर घोलकर दे दिया। जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई। बेटमा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक निहाल (19) पुत्र संदीप चौधरी निवासी गोकलपुर थाना देपालपुर की शिकायत पर गोलू यादव पृथ्वी डिफेंस एकेडमी और शुभम पर केस दर्ज किया गया है। निहाल ने अपनी शिकायत में बताया कि वह इस एकेडमी से एक साल से पढ़ाई कर आर्मी में जाने की तैयारी कर रहा है। उसने 22 अप्रैल को अग्नि वीर की एग्जाम दी थी। 28 मई को उसका रिजल्ट आया। इसमें वह फेल हो गया। इस बात से वह तनाव में था। इसे लेकर टीचर गोलू यादव और शुभम ने घोलकर कुछ पिला दिया। इसके पीने के बाद तबीयत बिगड़ती तो निहाल को अस्पताल पहुंचाया। इस दौरान दोनों ने मुझसे कहा कि किसी को मत बताना कि कुछ पिलाया है। तुम्हारा सिलेक्शन अगले साल हो जाएगा। रात को घर पहुंचा तो अगले दिन फिर तबीयत बिगड़ी। तब बेटमा के बाद देपालपुर फिर इंदौर के सीएचएल अस्पताल भेजा। यहां पुलिस को सूचना दी गई। यहां अपने बयान देने के बाद पुलिस ने मामले में केस दर्ज कर लिया।

विजयवर्गीय ने अक्षय बम को दिया जीत का श्रेय

इंदौर (नप्र)। नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बीजेपी के शंकर लालवानी की रिकॉर्ड तोड़ जीत का श्रेय अक्षय बम को दिया है। उन्होंने एक कार्यक्रम में इसे लेकर बयान दिया। उन्होंने कार्यक्रम में कहा कि लालवानी जी को जो जीत मिली है, इसमें अक्षय बम का साहसिक निर्णय था। लालवानी की इतनी बड़ी जीत है कि अब इस रिकार्ड को कोई तोड़ नहीं सकता, ऐसा मुझे लगता है। श्रेय अक्षय जी को ही है।

लालवानी ने जीत के बाद कहा था कि यह जीत मोदीजी को समर्पित

है। उन्होंने कहा कि यह जीत मोदी जी की नीतियों की जीत है, बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने जिस तरह से मेहनत की है, यह उनकी जीत है। इंदौर की जनता की जीत है और बीजेपी संगठन और सरकार ने जिस तरह से काम किए, यह उन सभी की जीत है। लालवानी ने कहा कि बीते चुनाव जितने ही वोट इस बार भी डले, लेकिन बीजेपी को इंदौर में इससे ज्यादा वोट मिले। (बीजेपी को 12.23 लाख वोट मिले, बीते चुनाव में उन्हें 10.68 लाख वोट मिले थे)। यह दर्शाता है कि जनता का विश्वास बीजेपी पर और मोदी पर बढ़ा है। लालवानी ने बीजेपी के संजय सोलंकी को 11.75 लाख वोट से हराया है। लालवानी को 12.26 लाख वोट, सोलंकी को 51669 वोट मिले हैं। नोटा को 2.18 लाख वोट मिले थे।

यह था इंदौर में बम कांड

कांग्रेस ने अक्षय बम को प्रत्याशी बनाया था, लेकिन नाम वापसी के अंतिम दिन 29 अप्रैल को वह विधायक रमेश मेंदोला, पार्षद जीतू यादव व अन्य के साथ कलेक्ट्रेट पहुंचे और नाम वापस ले लिया। वापस वह कार से रवाना हो गए।

इंदौर का विजन डॉक्यूमेंट

अब इन 8 उम्मीदों को रिकॉर्ड ऊंचाई दें सांसद लालवानी

इंदौर (नप्र)। शहर की जनता ने 5 साल के लिए एक बार फिर शंकर लालवानी को सांसद चुना है। कांग्रेस के मैदान से हटने के बाद लालवानी इस बार रिकॉर्ड मतों से जीते हैं। मीडिया ने एक्सपर्ट से जाना कि सांसद को इस पारी में हेल्थ, स्पोर्ट्स, लोक परिवहन, लॉ एंड ऑर्डर, इन्फ्रास्ट्रक्चर, कनेक्टिविटी और मेट्रो पॉलिटन सिटी जैसे सेक्टर को लेकर किस लेवल पर काम करने की जरूरत है।

डीम्ड यूनिवर्सिटी

रिसर्च सेंटर और ऑटोनॉमस कॉलेज बढ़ाना होंगे

पांच साल पहले इंदौर में 7 प्राइवेट यूनिवर्सिटी थीं, जो अब बढ़कर 13 हो गई हैं। निजी कॉलेजों की संख्या 250 के पार पहुंच गई है, लेकिन शिक्षा जगत को आज भी एक रिसर्च सेंटर और दो दर्जन ऑटोनॉमस सरकारी कॉलेजों की जरूरत है। शहर में हायर और स्कूल एजुकेशन में करीब 10 लाख स्टूडेंट्स पढ़ाई करते हैं। सरकारी स्कूलों का कमजोर इन्फ्रास्ट्रक्चर आज भी चुनौती है। बाहर से पढ़ने आने वाले स्टूडेंट्स की संख्या हर साल 4 लाख पहुंच चुकी है, लेकिन उनकी सुविधाओं का सिस्टम संगठित नहीं है।

लॉ एंड ऑर्डर

- कमिश्नरी सिस्टम पर रिव्यू हो, सुगम ट्रैफिक के लिए नए-नए फ्लायओवर, अंडरपास चाहिए
- सफाई को लेकर देश में जितना इंदौर का रुतबा है, उतने ही बुरे हालात ट्रैफिक के कारण है। पुलिस कमिश्नरी के बावजूद अपराध बढ़ रहे हैं। लूट, हत्या, दुष्कर्म, चोरी के आंकड़े इसका सबूत हैं। अपराधियों में पुलिस का कम होता खौफ इसकी बड़ी वजह है। सांसद को जनप्रतिनिधियों और सरकार

के साथ मिलकर अहम प्रयास करना जरूरी है।

- 500 से अधिक वाहन पुलिस टीम के पास

सांसद से अब ये उम्मीदें

- फ्लायओवर, ओवरब्रिज, अंडरपास पर काम करना होगा। 'पुलिस के 30 फीसदी खाली पदों पर नई नियुक्तियां करना होंगी।' साइबर क्राइम और महिलाओं पर अपराध को नियंत्रित करने इंवेस्टिगेशन की अलग टीम बनाएं। 'कमिश्नरी सिस्टम को रिव्यू कर संशोधन करने की जरूरत है।' नशाखोरी पर कंट्रोल करना होगा।

इन्फ्रास्ट्रक्चर

- फ्लायओवर, मास्टर प्लान का सर्कुलेशन प्लान बने; मंडी और नए बाजार विकसित करवाएं
- मास्टर प्लान में 110 किमी के 12 एमआर, 2 रिंग रोड बनना थे। इनमें से 55 किमी सड़कें बनी हैं। एमआर 10 व आरई 1 बना है। बायपास का निर्माण हुआ, पश्चिम बायपास पर काम शुरू हुआ है। दो बस स्टैंड जल्द शुरू होंगे। बीआरटीएस पर एलिवेटेड सड़क का निर्माण भी शुरू हुआ है। ड्रेनेज और पेयजल नेटवर्क सिस्टम बनाया है।

12 एमआर सड़कें जो पूरे शहर को जोड़ रहीं- 6एमआर 5, 3, 4, 11, 12, पूर्वी रिंग रोड सहित 60 किमी की मास्टर प्लान सड़कें पूरी करवाएं। एमआर 8 का निर्माण शुरू करें। 6मंडी, रेलवे स्टेशन, कन्वेंशन सेंटर, नए बाजार, 10 स्थानों पर फ्लायओवर जरूरी। 6एयरपोर्ट पर टर्मिनल विस्तार। ट्रांसपोर्ट नगर, बस स्टैंड की योजना को मूर्त रूप देना जरूरी है।

कनेक्टिविटी

- इंदौर पर्यटन, लॉजिस्टिक का बड़ा हब, अब ईस्ट-साउथ को एक-दूसरे से जोड़ना जरूरी
- पर्यटन और लॉजिस्टिक की दृष्टि से इंदौर मध्यभारत का महत्वपूर्ण केंद्र है। रेल, सड़क व एयर तीनों से कनेक्टिविटी बीते सालों में बेहतर हुई है। रेलवे से मुंबई व कांडला पोर्ट से जुड़े हैं, वहीं सड़क मार्ग से दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे से भी मंदसौर के समीप गरोठ जंक्शन से जुड़ाव हुआ है। एयर से देश के 23 और 3 इंटरनेशनल शहरों से जुड़े हैं।
- **23 शहरों से सीधी एयर कनेक्टिविटी-** 'पूर्व से जोड़ने के लिए एयर, रेलवे के साथ हाईवे से कोलकाता को जोड़ने की योजना तैयार करवाएं।' नागपुर एयर कार्गो हब की तरह ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट बनाकर इंटरनेशनल कार्गो लॉजिस्टिक हब की तरह विकसित कर सकते हैं। यह कार्य केंद्र से होगा। 'इंटरनेशनल फ्लाइट्स में अब सिंगापुर, बैंकॉक को भी जोड़ें।'
- **4800 वर्ग किमी का होगा प्लान, 2 संभाग होंगे शामिल, 1 करोड़ आबादी को फायदा-** इंदौर को मेट्रो ट्रेन के लिए मेट्रोपॉलिटिन रीजन घोषित किया है। इसमें इंदौर नगर निगम, नगर पालिका पीथमपुर, नगर पंचायत राऊ, महू और बेटमा सहित इंदौर की 93 ग्राम पंचायतें और धार की 17 पंचायतें शामिल हैं।

पत्रकार पर हमला करने का मामला

2 हजार के इनामी गैंगस्टर सतीश भाऊ का नाटकीय ढंग से सरेंडर

इंदौर (नप्र)। बाणगंगा क्षेत्र के एक समारोह में पत्रकार पर हमला करने के मामले में फरार चल रहे दो हजार रुपए के इनामी गैंगस्टर सतीश भाऊ ने मंगलवार सुबह नाटकीय ढंग से सरेंडर कर दिया। पुलिस ने तुरंत उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। हालांकि, पुलिस का कहना है कि भाऊ ने सरेंडर नहीं किया। अधिकारियों का कहना है, वह बायपास क्षेत्र में आया था, सूचना मिलते ही टीम ने घेराबंदी कर उसे दबोच लिया।

टीआई लोकेश भदौरिया ने बताया कि 23 मई की रात गुंडे भाऊ ने गब्बर चिकना, अमित जादौन, आशीष जादौन और अर्पित उर्फ शिब्बू व अन्य के साथ पत्रकार अंकुर जायसवाल पर हमला किया था। पुलिस ने बदमाशों पर जानलेवा हमले की गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया था। भाऊ ने राजनीतिक संपर्क का फायदा उठाकर नाटकीय ढंग से सरेंडर किया है।

पुलिस के सामने मिलने पहुंचे कई गुंडे

वह थाने में सीना तानकर पुलिस के साथ हंसता-मुस्कुराता बात कर रहा था। उसे एक बदमाश की तरह नहीं रखा गया। जवान उसकी खातिरदारी करते नजर आए। इधर, पेशी के दौरान कोर्ट में उसके समर्थक गुंडों का मजमा लगा रहा। कई गाड़ियों में शहर के कुख्यात गुंडे भाऊ से मिलने कोर्ट पहुंचे थे। वहां भी किसी गुंडे पर कोई एक्शन नहीं लिया गया। सभी बेखौफ होकर पुलिस के सामने भाऊ से बतियाते रहे।

सांसद से अगले पांच साल की उम्मीदें

● होलकर कॉलेज और आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिलाने में मदद हो। होलकर कॉलेज देश की पहली साइंस यूनिवर्सिटी बने। ● शहर में 5 सरकारी ऑटोनॉमस कॉलेज हैं। छात्र संख्या के अनुसार कम से कम 20 होना चाहिए। इससे शिक्षा का स्तर बेहतर होगा। ● सीएम राइज सहित अन्य योजनाओं में सरकारी स्कूलों को अपग्रेड करने की घोषणाओं को कागजों से निकाल धरातल पर लाने की जरूरत। ● हर साल 4 लाख विद्यार्थी देश के अलग-अलग शहरों से पढ़ाई के लिए इंदौर आ रहे हैं। उनकी सुविधाओं से जुड़ी व्यवस्थाएं करना जरूरी हैं। ● महू की आम्बेडकर यूनिवर्सिटी में चुनिंदा छात्र हैं, क्योंकि वहां बेहद कम विषय पढ़ाए जा रहे हैं। वहां फॉरेस्ट यूनिवर्सिटी बन सकती है। ● आईआईएम, आईआईटी, कैट और सोयाबीन रिसर्च सेंटर जैसे संस्थानों से शहर के सरकारी कॉलेजों को जोड़ने की जरूरत। ● सिंधिया और दून स्कूल जैसे बड़े ब्रांड के प्राइवेट स्कूलों के लिए भी इंदौर में काफी संभावनाएं हैं। ● 10 लाख के करीब विद्यार्थी स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी और कोचिंग क्लास में ● 13 प्राइवेट यूनिवर्सिटी ● 260 प्राइवेट कॉलेज ● 80 इंजीनियरिंग, फॉर्मेसी कॉलेज हैं शहर में

संपादकीय

बसपा के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह

इस लोकसभा चुनाव में बीजेपी के बाद सबसे तगड़ा झटका मायावती की पार्टी बहुजन समाज पार्टी को लगा है। बीएसपी को चुनाव में एक भी सीट नहीं मिली। यहां तक कि उसका वोट शेयर भी घटकर 2 फीसदी रह गया। इन नतीजों से भड़कीं मायावती ने कहा कि आइंदा वो मुसलमानों को सोच समझकर ही टिकट देंगी। एक बयान में मायावती ने कहा कि लोकसभा चुनाव में उचित प्रतिनिधित्व देने के बावजूद मुस्लिम समाज ने हमारा साथ नहीं दिया। चुनाव में हुए नुकसान का हम गहन विश्लेषण करेंगे और देश के करोड़ों, गरीबों, दलितों, शोषितों, आदिवासियों, पिछड़ों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए काम करते रहेंगे। गौरतलब है कि इस बार लोकसभा चुनाव में बसपा ने अकेले ही चुनाव लड़ने का फैसला किया था। हालांकि 2014 के लोकसभा चुनाव में भी बसपा को कोई सीट नहीं मिली थी, लेकिन 2019 में मायावती ने सपा व रालोद के साथ गठबंधन किया और उसे लोस चुनाव में 10 सीटों पर जीत मिली थी। इस दफा उसे एक भी सीट नहीं मिली, लेकिन राज्य में उभर रहे युवा दलित नेता चंद्रशेखर आजाद रावण को नगीना सीट से जीत मिली है। यह मायावती के लिए चिंता का बड़ा कारण है। दूसरा बड़ा कारण यह है कि इस दफा दलित वोटों का बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी की तरफ खिसक गया। इसका कारण यह अफवाह थी कि अगर भाजपा 400 सीटें जीती तो वह संविधान बदल देगी और आरक्षण खत्म कर देगी। दरअसल बसपा की इस हालत के पीछे कारण भी खुद मायावती ही हैं। मायावती के भाजपा के साथ नरम रिश्तों को लेकर मुसलमान तो पहले ही शंकित थे। बाद में दलित भी बिफर गए। यह माना जा रहा था कि मायावती पर दायर भ्रष्टाचार के मामलों के चलते बहनजी भाजपा की परोक्ष रूप से मदद कर रही हैं। इसीलिए उन्होंने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला लिया है। लिहाजा मुसलमानों ने बसपा से पल्ला झाड़ लिया। इसी तरह बीच चुनाव में उन्होंने अपने घोषित उत्तराधिकारी आकाश आनंद को भी पद से हटाकर चुनाव प्रचार से भी रोक दिया। हालांकि खुद मायावती ने यूपी के 26 जिलों में प्रचार किया, लेकिन उसका कुछ खास असर दिखाई नहीं दिया। चुनाव में पूरे देश में उसे महज 2.06 फीसद वोट ही मिले हैं। ऐसे में उसकी राष्ट्रीय पार्टी की मान्यता भी खतरे में पड़ सकती है। मायावती ने कुछ जगह भाजपा प्रत्याशियों को भी नुकसान पहुंचाया। प्रदेश की हमीरपुर लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी के राजेंद्र सिंह ने 2629 वोटों से बीजेपी के कुंवर पुष्पेंद्र सिंह को हराया। इस सीट पर बीएसपी के निर्दोष कुमार दीक्षित 94696 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। कुल मिलाकर इन चुनाव नतीजों ने बसपा के राजनीतिक भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। क्योंकि मायावती मनमर्जी से पार्टी चलाती हैं। वहां पर 1 से 10 तक सिर्फ मायावती ही हैं। नेताओं और कार्यकर्ताओं की हैसियत सेवकों जैसी है। वो किसको कब क्या बना दें, किसको हटा दें, कहा नहीं जा सकता। उनका कोई उत्तराधिकारी भी नहीं है। अभी तक जाटव जाति मायावती के प्रति निष्ठावान रही है। लेकिन इस समुदाय की निष्ठा भी डोलने लगी है। मायावती की बसपा को नया खतरा युवा दलित नेता चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी से है। चंद्रशेखर नगीना सीट से सांसद चुने गए हैं। उन्हें आक्रामक नेता माना जाता है, जिसकी वजह से युवा दलित तेजी से आजाद समाज पार्टी की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आने वाले समय में मायावती को बसपा का वजूद बचाने के लिए भाजपा की शरण में जाना पड़ सकता है। मुमकिन है कि यूपी में अगले विस चुनाव में दोनों के बीच गठबंधन हो जाए।

नजरिया

नवीन कुमार

(मुंबई के वरिष्ठ पत्रकार और विश्लेषक)

उद्धव और पवार की असली पार्टी पर मुहर लगाई

चुनाव नतीजे के बाद असली एनसीपी के नेता शरद पवार ने राज्य की जनता और कार्यकर्ताओं का आभार मानते हुए कहा कि राज्य की जनता ने बीजेपी की तोड़फोड़ की राजनीति को करारा जवाब दिया है। उधर, मोदी पर तंज कसते हुए असली शिवसेना यानी उद्धव गुट के नेता संजय राऊत ने कहा कि नकली भगवान (मोदी) हार गए, नकली संतान (उद्धव) ने आपको हराया है। ध्यान रहे कि मोदी ने उद्धव को बाल ठाकरे का नकली संतान कहा था।

महाराष्ट्र में जनता की अदालत ने उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार की एनसीपी पर असली पार्टी की मुहर लगा दी। शिवसेना और एनसीपी में विभाजन के बाद उद्धव और शरद को जब मुख्य चुनाव आयोग और अदालत से न्याय नहीं मिला, तो उन्होंने जनता की अदालत में ही जाने का फैसला किया। इस बार के लोकसभा चुनाव में जनता ने अपना फैसला दे दिया। उद्धव की शिवसेना ने एकनाथ शिंदे की शिवसेना से ज्यादा सीटें हासिल की है तो शरद की एनसीपी ने भी अजित पवार की एनसीपी को बुरी तरह से परास्त कर दिया है। अजित की एनसीपी को एक ही सीट मिली है। शिंदे तो राज्य के मुख्यमंत्री भी हैं और उनके नेतृत्व में चुनाव भी लड़ा गया। लेकिन जनता ने असली पार्टी के पक्ष में अपना मत जाहिर किया है। इस चुनाव में उद्धव एक बेहतरीन राजनीतिक खिलाड़ी के रूप में उभरकर सामने आए हैं जिन्होंने न सिर्फ शिवसैनिकों का मनोबल बढ़ाया बल्कि महाविकास आघाड़ी के घटक दलों कांग्रेस और एनसीपी को भी फायदा दिलाया। नरम हिंदुत्व के बल पर अल्पसंख्यकों का भी विश्वास जीता है।

बीजेपी ने पहले उद्धव की शिवसेना में विभाजन कराया और उद्धव के नेतृत्व वाली महा विकास आघाड़ी सरकार को गिरा दिया। इसके बाद बीजेपी ने शिवसेना के विभाजित गुट के नेता शिंदे के नेतृत्व में राज्य में सरकार बनाई। विपक्ष को और कमजोर करने के लिए बीजेपी ने शरद की एनसीपी में भी विभाजन करा दिया। विभाजन के बाद बीजेपी ने अजित गुट को भी शिंदे सरकार में शामिल करा दिया। बीजेपी पर आरोप है कि उसने शरद की पार्टी में ही विभाजन नहीं कराया बल्कि राजनीति के चक्र में फंसाकर अजित के माध्यम से पवार परिवार में भी विभाजन की रेखा खींच दी गई। यह राज्य के राजनीतिक इतिहास में अनोखा था जिसकी खूब आलोचना भी हुई। इस आलोचना के अलावा राज्य की जनता ने भी इसे अपनी तरह से देखा और परखा। उद्धव और शरद को भरोसा था कि राज्य की जनता अपने फैसले से गंदी राजनीति करने वालों को जवाब देगी और इस चुनाव में जवाब देखने को मिला।

उद्धव और शरद की पार्टी में विभाजन की राजनीति विपक्ष को कमजोर वाली थी। लेकिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब उनकी पार्टी को नकली कहना शुरू किया तो राज्य की जनता इसे अलग तरह से देखने लगी। इसी बीच मोदी ने उद्धव को बाल ठाकरे का नकली पुत्र भी कहा तो इसे न सिर्फ शिवसैनिकों बल्कि राज्य की जनता ने इसे अपमानित करने वाली बात मान ली। जनता खामोश रही। जनता ने मोदी का शिंदे की शिवसेना और अजित की एनसीपी को असली पार्टी कहना भी चुपचाप सुन लिया। अब लोकसभा चुनाव के जो नतीजे आए हैं उसमें स्पष्ट है कि जनता को शिवसेना और एनसीपी में विभाजन के साथ मोदी की बात नागवार गुजरी थी और जनता ने जो अपना फैसला दिया उसमें मोदी और बीजेपी महागठबंधन महायुति को जोर का झटका दिख रहा है। उद्धव की शिवसेना और शरद की एनसीपी में विभाजन के बाद बीजेपी खुद को राज्य की सबसे ताकतवर पार्टी मानने लगी थी। उसके अंदर इतना तो अहंकार आ ही गया था कि इस बार लोकसभा चुनाव में उद्धव और शरद का नामोनिशान खत्म कर दिया जाएगा। लेकिन, यह सच है कि महाराष्ट्र में बाल ठाकरे और उनकी पार्टी शिवसेना को मिटाना आसान नहीं है। उद्धव ने भी कहा था कि राज्य की राजनीति ठाकरे ब्रांड से चलती है। बीजेपी ने पहले विभाजन कराकर शिवसेना और उसके निशान को चुराया और उसके बाद बाल ठाकरे के भतीजे और मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे से हाथ मिलाकर ठाकरे ब्रांड को भी चुराने की कोशिश की गई। लेकिन, बाल ठाकरे के शिवसैनिकों को पता है कि असली शिवसेना कौन है। उधर 83 साल के शरद अपने भतीजे अजित को परास्त करने के लिए मैदान में उतर गए और उन्होंने जता दिया कि उनकी चाणक्य नीति कैसे भारी पड़ती है। उद्धव और शरद के साथ सहानुभूति की लहर चली और राज्य में बीजेपी की चुनावी रणनीति को ध्वस्त कर दिया।

महाराष्ट्र ऐसा राज्य है जिसके सहारे बीजेपी 400 पार का सपना साकार करना चाहती थी। इसलिए मोदी ने राज्य में लगभग 18 रैलियां की। लेकिन, उद्धव और शरद मोदी के आगे चुनौती के रूप में खड़े हो गए और उनके साथ बीजेपी पर लगातार हमला करते रहे। मोदी ने जब शरद को भटकती आत्मा कहा तो शरद उससे विचलित नहीं हुए। बल्कि, जवाब में कहा कि हां, मैं किसानों की समस्या सुलझाने के लिए भटकता रहता हूं। शरद की इस भावना का किसानों पर सकारात्मक असर पड़ा। उधर, उद्धव ने भी एक नारा बुलंद किया कि अब की बार बीजेपी तड़ीपार। इसका भी मतदान पर असर पड़ा। अब देखिए, महाराष्ट्र की राजनीति में सबसे ताकतवर पार्टी वही है जिसका मुंबई पर कब्जा रहता है। राज्य में महायुति (बीजेपी, शिंदे गुट शिवसेना, अजित गुट एनसीपी) और महा विकास आघाड़ी (कांग्रेस, उद्धव गुट शिवसेना, शरद गुट एनसीपी) में सीधा मुकाबला रहा है। आघाड़ी के घटक दलों ने एकता कायम रखी। मुंबई पर राज करने के लिए मोदी ने रोड शो किया और राज ठाकरे के साथ ऐतिहासिक शिवाजी पार्क में सभा की ताकि उद्धव के मराठी वोटों को खींचा जा सके। मुंबई में लोकसभा की छह सीटें हैं। अब नतीजा भी देख लीजिए। एक तरह से उद्धव ने मुंबई से बीजेपी और शिंदे की शिवसेना को तड़ीपार करा दिया है। बीजेपी और शिंदे गुट को मुंबई में दो-दो सीटों पर हार मिली और मोदी ने मुंबई उत्तर-पूर्व लोकसभा सीट पर अपने जिस गुजराती उम्मीदवार मिहिर कोटेचा के लिए रोड शो किया था उसे भी हार मिली है। मोदी का 400 पार का सपना चूर हुआ और मोदी को राज्य की जनता ने नकार दिया। बीजेपी मुंबई में सिर्फ पियुष गोयल और शिंदे रवींद्र वायकर वाली सीट बचाने में कामयाब हो पाई। शिंदे ने कांग्रेसी नेता मिलिंद देवरा को अपनी पार्टी में शामिल कर उन्हें राज्यसभा में भी भेजा। लेकिन, शिंदे के लिए मिलिंद दक्षिण मुंबई में मददगार साबित नहीं हो पाए। शिंदे के सभी उम्मीदवार वैसे थे जो ईडी से जान बचाने के लिए उद्धव का साथ छोड़ गए थे। शिंदे इस बात से खुश हैं कि उन्होंने अपने ठाणे गढ़ को बचा लिया है। इस गढ़ में ठाणे के अलावा कल्याण सीट से वह अपने बेटे डॉ श्रीकांत शिंदे को जिताने में कामयाब हुए हैं। अब बीजेपी की हालत तो यह हो गई कि खुद तो डूबेंगे सनम तुझे भी ले डूबेंगे। राज्य में 48 लोकसभा की सीटें हैं। पिछले चुनाव में बीजेपी 22 सीटों पर जीत हासिल करके राज्य की बड़ी पार्टी बनी थी। इस बार चुनाव में वह आधी से भी कम यानी 9 हो गई है जबकि उसने 28 सीटों पर चुनाव लड़ा था। फिसड्डी रहने वाली कांग्रेस को नया जीवन मिल गया है और उसने 17 सीटों पर चुनाव लड़कर 13 सीटें जीती और राज्य की बड़ी पार्टी हो गई है। जबकि पिछले चुनाव में उसने एक ही सीट पर जीत हासिल की थी। बीजेपी ने नांदेड़ से कांग्रेस के ताकतवर नेता अशोक चव्हाण से बगावत कराई और उन्हें राज्यसभा में भी भेजा। लेकिन नांदेड़ में कांग्रेस ने अपनी सीट बरकरार रखी है।

अमरावती में नवनीत राणा का हारना बीजेपी के लिए सदमे से कम नहीं है। नवनीत ने ही उद्धव के खिलाफ हनुमान चालीसा का पाठ करके सुर्खियां बटोरी थी। लेकिन उन्हें कांग्रेस के उम्मीदवार से हार मिली है। उद्धव ने 21 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे जिसमें से 13 सीटों पर शिंदे गुट के उम्मीदवारों से मुकाबला था। उद्धव गुट ने शिंदे गुट को परास्त करने के साथ 9 सीटों पर जीत दर्ज कर ली। इससे जाहिर है कि शिवसैनिक उद्धव के साथ हैं। 15 सीटों पर चुनाव लड़ने वाले शिंदे गुट को 7 सीटों पर ही जीत मिली है। इधर 10 सीटों पर चुनाव लड़ने वाले शरद ने 8 सीटों पर जीत हासिल की और अपनी बारामती की सीट भी बचा ली। बारामती को जीतने के लिए शरद के भतीजे अजित ने अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार को सुप्रिया सुले के सामने खड़ा किया था। लेकिन अजित अपनी पत्नी को जीत नहीं दिला पाए। इससे पहले पिछले चुनाव में उन्होंने अपने बेटे पार्थ पवार को भी मैदान में उतारा था। लेकिन वह बेटे पार्थ को जिताने में सफल नहीं हुए थे। इस चुनावी नतीजे पर शरद ने कहा है कि यह परिवर्तन की दिशा है। इस परिवर्तन की दिशा का इशारा पांच महीने के अंदर होने वाले राज्य विधानसभा के चुनाव की तरफ भी है।

जनमत-2024

भवेश दिलशाद

लेखक पत्रकार हैं।

उत्तर में किन प्रश्नों का मिला उत्तर?

जनता ने इस बार विपक्ष का मज़बूत किया, सरकार को कमज़ोर। यह पूरे देश को समझ आ चुका है। अब आंकड़ों और चुनाव परिणामों के विश्लेषण से समझना ज़रूरी है कि मूल प्रश्न क्या थे और उनका क्या हुआ या होगा। उत्तर भारत के सात राज्यों में कुल 38 संसदीय क्षेत्रों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को सिर्फ़ 14 ही इस बार हाथ लगे। 2019 की तुलना में कुल 10 सीटों का सीधा नुक़सान है। ये वही राज्य हैं, जहां भाजपा ने संविधान संशोधन करते हुए 2019 में नये राज्यों का गठन किया, नये ढंग से सीमाएं तय कीं। ये वो राज्य भी हैं जहां भाजपा की निर्वाचित सरकार पर संकट रहा, सवाल उठे और वह राज्य भी है, जिसने ऐसा आंदोलन छेड़ा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घुटने टेकने पड़े।

चुनाव से पहले ही भारत के कुछ हिस्सों में विशेष रूप से भाजपा की प्रतिष्ठा और नैतिकता दांव पर लगी थी। केंद्र सरकार के निवर्तमान कार्यकाल में विशेषकर पंजाब के किसानों ने दो बार लंबी लड़ाई लड़ी। सीधे केंद्र सरकार से टकराये किसानों ने पहले क़रीब 11 महीने के हल्ला बोल के दौरान दिल्ली से भिड़ंत की तो भाजपा की आईटी सेल ने किसानों के खिलाफ़ ख़ालिस्तानी और पाकिस्तानी होने तक का नैरेटिव चला दिया लेकिन अंततः प्रधानमंत्री मोदी को उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से ऐन पहले तीनों कृषि क़ानून वापस लेने पड़े थे। पंजाब के लोकसभा नतीजे बता रहे हैं यहां भाजपा का सूपड़ा साफ़ हुआ। पिछली बार जो दो सीटें मिली थीं, वह भी जाती रहीं। पंजाब में प्रधानमंत्री मोदी ने रैलियां कीं। कांग्रेस के जिन नेताओं को तोड़ा, वो भी भाजपा के लिए सीट न जीत सके। प्रश्न था भाजपा यहां खुद को कैसे किसान हितैषी व साफ़नीयत साबित करेगी! स्पष्ट है भाजपा की नीतियों और फ़ैसलों को पंजाब ने सिरे से ख़ारिज कर दिया।

पंजाब के दक्षिण पूर्वी सीमा से सटे हरियाणा में भाजपा ने 2019 की तुलना में 5 सीटें खोयी हैं और कांग्रेस ने 5 अर्जित की हैं। राज्य सरकार को लेकर भाजपा ने यहां जिस तरह की राजनीति की, जिस तरह ऐन वक्त पर मुख्यमंत्री बदल दिया गया, मुख्यमंत्री पर जिस तरह सवाल उठे, गठबंधन की नीयत को लेकर भाजपा के रवैये पर जो आलोचनाएं हुईं, उन तमाम प्रश्नों के जवाब में जनता ने भाजपा के लिए अपना विश्वास आधा कर दिया। हरियाणा के पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में पिछली बार की ही तरह पांचों सीटें भाजपा के खाते में आयीं। यहां राज्य सरकारों के संदर्भ में प्रचलित धारणा रही कि जनता बारी-बारी से कांग्रेस व भाजपा को मौक़ा देती रही, लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में यह मिथक भाजपा ने तोड़ दिया था। आम चुनाव में भी भाजपा की सियासी ज़मीन यहां मज़बूत होती दिखी है। आम चुनाव में, हिमाचल में भी 2019 की ही तरह भाजपा ने चारों सीटें जीती हैं, लेकिन यहां विधानसभा उपचुनाव महत्वपूर्ण विषय है।

हिमाचल में 1 जून को उन छह विधानसभा सीटों के लिए भी वोटिंग हुई, जो कांग्रेस के विधायकों की बर्खास्तगी की वजह से खाली हुई थीं। कांग्रेस का आरोप था कि उसके इन विधायकों ने राज्यसभा के लिए भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में वोटिंग इसलिए की क्योंकि भाजपा ने यहां 'ऑपरेशन लोटस' चलाकर सरकार गिराने तक की साज़िश रची थी। अब छह में से 4 सीटें जीतकर कांग्रेस की सुक्खू सरकार फ़िलहाल बच गयी है। हालांकि यहां सरकार उखाड़ने-पछाड़ने की कोशिशों के अंदेशे अब भी रह सकते हैं।

अब बात भारत के शीर्ष की, जो 2019 में दो-फाड़ कर दिया गया। अनुच्छेद 370 को ख़त्म कर भाजपा सरकार ने यहां जम्मू-कश्मीर को एक अलग राज्य और लद्दाख को केंद्रशासित प्रदेश बनाकर नये ढंग से सीमांकन किया। संसदीय क्षेत्रों का परिसीमन भी किया गया और हिंदू-मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण भी। इस पूरी कवायद के बावजूद आम चुनाव से ऐन पहले भाजपा ने जम्मू की हिंदू बहुल दो सीटों पर तो चुनाव लड़ा लेकिन कश्मीर की 3 सीटों पर मैदान छोड़ दिया। यहां 2 सीटें नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जीतीं तो एक निर्दलीय ने। ध्यान देने योग्य है कि बारामूला सीट पर उमर अब्दुल्ला को हराने वाले प्रत्याशी शेख अब्दुल रशीद ने तिहाड़ जेल में बंद होते हुए यहां चुनाव लड़ा है। रशीद को आतंकी फंडिंग के आरोप में 2019 में यूएपीए क़ानून के तहत जेल में डाल दिया गया था। उनके बेटों अबरार और असरार ने उनका चुनाव अभियान चलाया और पहले भी कश्मीर में दो बार विधायक रह चुके रशीद ने निर्दलीय लड़ते हुए उमर को शिकस्त दी।

लद्दाख की एक सीट की बात भी बेहद ज़रूरी है। इस सीट पर 2014 और 2019 में भाजपा ने चुनाव जीता था लेकिन इस बार भाजपा यहां तीसरे नंबर पर रही है। यहां मोहम्मद हनीफ़ा ने जीत दर्ज की, जो पहले नेशनल कॉन्फ्रेंस से जुड़े रहे। दूसरे नंबर पर कांग्रेस रही। जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की कुल 6 सीटों में से 3 पर भाजपा रणछोड़ रही। जिन तीन पर लड़ी उनमें से भी एक गंवा बैठी। प्रश्न यह कि अनुच्छेद 370 हटाने के फ़ैसले पर क्या इसे जनता का उत्तर माना जाये?

महाराष्ट्र में जिस तरह झटका लगा, भाजपा को आम चुनाव न सही पर हिमाचल उपचुनाव में उसी तरह का झटका लगना क्या साबित करता है? भाजपा की वैचारिकता से क्या जनता ने असहमति नहीं जतायी? आंदोलनकारियों के ख़िलाफ़ एक दमनकारी नज़रिया अपनाना क्या भाजपा को पंजाब में महंगा पड़ा? भ्रष्टाचार और कुर्सी के प्रश्न अन्य कई राज्यों में भाजपा के सामने रहे। प्रतिष्ठा और नैतिकता के प्रश्न पर भाजपा उत्तरी राज्यों में कितनी निरुत्तर दिखी? इससे भी बड़ा प्रश्न यह है कि क्या अब भाजपा के दृष्टिकोण और नैतिकता में कोई परिवर्तन आएगा।

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

ये क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ?

अब होनी को कौन टाल सकता था, होनी तो होकर ही रहा करती है। लेकिन जिस किसी बात का होना पक्के तौर पर मान लिया जाता है, उसका न होना अनहोनी करार दिया जाता है। कल तक देशवासी लगभग पूर्ण रूप से निश्चिंत हो चुके थे कि ऐसी होनी होना है, लेकिन वैसी होनी नहीं हुई। भले आदमियों ने इसे अनहोनी करार दिया। ऐसा नहीं है कि व्यक्तिगत जीवन में ही हमारे साथ ऐसा घटित होता है, अपितु लोकतंत्र की राजनीति में होनी या अनहोनी की घटना के सर्वाधिकार आम मतदाताओं के पास सुरक्षित रहा करते हैं। वही भाग्य विधाता हुआ करता है।

अब आजादी के तकरीबन साढ़े सात दशक के उपरांत जैसे-जैसे लोकतंत्र परिपक्व होता रहा, वैसे-वैसे आम मतदाताओं के मन की थाह लेना मुश्किल होने लगा। अब ताजा चुनाव के मामले में यही तो हुआ। एक से बढ़कर एक अपनी प्रामाणिकता का दावा करने वाली सर्वेक्षण एजेंसी ने आम नागरिकों के मन को टटोलकर मतदाता का अनुमानित फैसला बड़े जोर-शोर के साथ प्रचारित और प्रसारित कर दिया। दरअसल मतदाताओं ने भी राजनेताओं की तरह अच्छा-खासा दांव खेला। उन्होंने ऊपरी मन से हवा के दबाव के अनुसार अपने मन की बात गोल-मोल तरीके से दर्शाई।

यानी कि मन की असल बात को वे गोल कर गए। एजेंसी वाले झांसे में आ गए और उन्होंने लगभग दो तिहाई बहुमत के आसपास का ताज समूह विशेष को पहना दिया। चारों ओर खुशियों के नगाड़े बजने लगे। चुनावी युद्ध फतह करने के पूर्व ही जीत का जश्न मनाए जाने की तैयारियां होने लगी। जब औपचारिक रूप से मतों की गिनती का क्रम चला, तब जाकर पता लगा कि अब मतदाता भी अपनी चतुराई का प्रदर्शन करने लगे हैं। उनके मन में कुछ और होता है लेकिन जाहिर कुछ और किया करते हैं। इधर वाला पूछे तो कह देते हैं उनको ही समर्थन दिया है और उधर वाला पूछे तो कहते हैं कि उनका ही समर्थन दिया है।

मतदान के अंतिम चरण की समाप्ति के तत्काल पश्चात अलग-अलग सर्वेक्षण एजेंसियों ने एग्जिट पोल के आंकड़े जाहिर कर दिए। इनके सर्वे का एकमात्र यही आधार था कि मतदाता से ही सवाल किया जाए कि उन्होंने किसके पक्ष में मतदान किया है। अब मतदाता को जब अपने गुप्त मतदान का रहस्योद्घाटन करने के लिए चाहे कितना भी प्रेरित क्यों न किया जाए, कोई जरूरी नहीं कि वह अपने पत्ते खोलें ही खोलें। दरअसल मतदाता ने ऊपरी तौर पर हवा के दबाव के वशीभूत किसी को कुछ तो किसी को कुछ कह दिया होगा। जिसके आधार पर मतदाताओं के समूह को या तो इधर का या उधर का करार दे दिया गया।

हकीकत जो भी हो, लेकिन यह भी सही है कि आदमी को यह पक्के तौर पर पता नहीं होता कि उसके घर के सदस्यों ने आखिर किसके पक्ष में मतदान किया है। वास्तव में हर किसी की अपनी-अपनी सोच हुआ करती है। वैसे मतदाताओं का एक वर्ग बीते दो-तीन दशकों से अपने व्यक्तिगत नफा-नुकसान का आकलन करने के उपरांत ही किसी के पक्ष में मतदान करने को प्रेरित होता है। काश कि यह सर्वेक्षण एजेंसी वाले इस बात की भी पड़ताल कर लेते कि कौन-कौन सा खेमा किस-किस को क्या-क्या देने वाला है? तो निश्चित रूप से एग्जिट पोल इधर वाले और उधर वाले में बराबरी की टक्कर का ऐलान कर देते।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

केदार शर्मा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आओ प्रदूषण दिवस मनाएँ!

पर्यावरण दिवस के मौके पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा था। डी.जे. पर पर्यावरण के गीत बज रहे थे। नत्थू ने विद्यालय प्रांगण में लगभग दो सौ पौधे लगाए थे। इस अवसर पर ज्योंही पुरस्कारदेने की घोषणा हुई तो सभास्थल पर खलबली मच गयी। छदामी जी ने फिर माइक हाथ में ले लिया था। वैसे छदामीजी की आवाज कोई माइक से कम नहीं थेपर माइक की संगत मिलते ही श्रोताओं के पास कानों के हाथ लगाने के अलावा कोई चारा नहीं बचता था।और तेज आवाज में दहाड़े-भाइयों यह पुरस्कार नत्थू को ही क्यों? माना कि नत्थू नर्सरी से पौधे खरीदकर लाया था पर उन पौधों को पानी तो हमने भी कई बार पिलाया था। बदामीजी ने कहा- पौधों की जड़ों में कई बार खाद हमने ही रमाया था। दुधारीजी कहाँ पीछे रहने वाले थे- महोदय,यह मत भूलो कि इन पौधों को खाने के लिए बकरियाँ अन्दर घुस आई थी उनको हमने ही बाहर भगाया था।

छीना-झपटी और अफरा-तफरी को भाँपकर टेंट और माइक वाला आगे आया-'तुम्हारी इस लड़ाई में कहीं मेरे पैसे नहीं डूब जाएँ, पहले मेरा हिसाब कर दो। आवाज सुनकर हलवाई भागकर आया-' मैंने यह जो सब्जी-पूड़ी और लड्डू जो बनाएं हैं इनका क्या होगा ? मेरा भुगतान कौन करेगा ? मुख्य अतिथि सबको समझाने में लगे थे-'अरे भाइयों मैं तो पहली बार ही मुख्य अतिथि बना हूं,सिर मुंडाए देर नहीं हुई और आपने बेमौसम ओलों की बौछार भी शुरू कर दी। कार्यक्रम का मुहूर्त नहीं निकलवाया था क्या।'

बिना मिठाई के भले ही कोई महाभोज सम्पन्न हो जाए पर बिना गाली गलौच के कोई लड़ाई पूरी नहीं हो सकती।सो पर्यावरण दिवस के इस आयोजन का क्रियाकर्म जारी था और गाली गलौच के रास्ते से होकर जूतमपैजार की ओर बढ़ रहा था। आखिरकार मुख्यअतिथि महोदय ने माइक हाथ में लेकर घोषणा की- 'भाइयों, आप लोग शांत हो जाएं। रही बात भुगतान की तो,आज के खर्चे का भुगतान करने के लिए मैं तैयार हूं बशर्ते आप सब लोग शांत रहें।'

अब तक शांत रहकर आरोप सुनने वाले मंच संचालक महोदय के होठ फड़कने लगे थे,भीतर जबान बेलगाम हो चुकी थी। इस बामाइक की जा रही इस लड़ाई को पूरा हालाकि मौहल्ला सुन रहा था,दरअसल मंच संचालक महोदय माइक गुस्से ही गुस्से में बंद करना भूल गये थे

तभी एक वृद्ध अचानक उस कार्यक्रम में आए। मंच पर आने की अनुमति माँगी और माइक बंद कर बिना माईक बोलने लगे- 'भाइयो, इस आयोजन स्थल के दूसरी ओर मेरा घर है। मेरी पत्नी कई दिनों से बीमार है, इस माइक पर हो रही लड़ाई से उसे बैचेनी होने लगी थी,इसलिए मुझे आना पड़ा है।' सभा में शांति छा गयी थी।

उन्होने बोलना जारी रखा --'मैं आप सबको सुझाव देता हूं कि नत्थू को कोई पुरस्कार नहीं दिया जाए। किसी को कोई पुरस्कार नहीं दिया जाए,न छदामीजी को न ही दुधारीजी को।कार्य अपने आप में स्वयं पुरस्कार है। पौधे लगाने का, पानी पिलाने का, रखवाली करने का सबका पुरस्कार प्रकृति बिना मांगे अपने ढंग से देगी। यह पुरस्कार की लड़ाई समाप्त हुई।'

आज के इस कार्यक्रम में हुई इस लड़ाई में जिसने सबसे बढ़िया प्रदर्शन (वाकयुद्ध और गालीगलौच के साथ) किया उसे पुरस्कार में नकद राशि मेरी ओर से दिए जाने की मैं घोषणा करता हूँ। अब कौन प्रथम रहा इसका निर्णय मैं आप सब पर छोड़ता हूँ। मुझे बता दीजिएगा।इस आयोजन का पर्यावरण तो आप लोगों ने बेमुलाहिजा,बेकायदा बिगाड़ ही दिया है तो क्यों नहीं आप सब इसे और बिगाड़ने के सूत्र दोहरा लें जैसे-'शादियों और खुशी के मौकों पर हम डी.जे.के वोल्यूम को अधिकतम खोलकर ही संगीत का आंनन्द लेंगे। मानव तन वैसे भी नश्वर है सो कान स्वस्थ रखकर कौनसा तीर मार लेंगे। अपने क्रोध को धारदार बनाने के लिए भरपूर विशिष्ट गालियों का प्रयोग करेंगे औरों को भी ऐसा करने से नहीं रोकेंगे।हम अगले पर्यावरण दिवस को इसी तरह प्रदूषण दिवस में बदल डालेंगे,भाषण देंगे।नारे लगाएँगे, वृक्षारोपण के,वीडियों,रील्स,मीम्स नियमित रूप से साल भर शेयर करेंगे।अपने सीवेज का पानी छोटे तालाबों गड्ढो और सूखे कुए और नदियों की ओर मोड़ देंगे।और भी जो आपको जो उचित लगे वह आप जोड़ सकते हैं ।आप खुद समझदार हैं।

अरे,अरे! यह क्या कर रहे हैं आप लोग ! शर्मिंदा होने की क्या बात है ! ये आप भला माफी क्यों मांग रहे हैं ?

त्वरित टिप्पणी

गौरव अवस्थी

रायबरेली में राहुल के लिए 'पहला प्यार' मां सोनिया से भी बड़ा

गांधी परिवार की बहू सोनिया गांधी पर भी रायबरेली ने पहली बार अपना प्यार लुटाया था लेकिन इतना नहीं जितना अपने बेटे सरीखे राहुल गांधी पर। 2004 के चुनाव में सोनिया गांधी को 378107 मत मिले थे यह कुल पड़े मतों का 58.75 प्रतिशत था। सोनिया गांधी के के प्रति रायबरेली का यह पहला प्यार था। सोनिया गांधी के सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने पर रायबरेली से पहली बार चुनाव लड़ने आए राहुल गांधी को रायबरेली ने हाथों हाथ लिया और मां सोनिया गांधी से 10 प्रतिशत अधिक मत पहले चुनाव में प्रदान किए। 10 प्रतिशत मतों का अंतर बहुत बड़ा होता है इसीलिए मैं कह रहा हूं कि रायबरेली ने राहुल पर अपना पहला प्यार मां से अधिक बरसाया है।

रायबरेली से राहुल गांधी जीत गए। उन्हें जीतना था। रायबरेली के मतदाता पहली बार में ही इतने बड़े अंतर से जीत दिलाएंगे, इसका भरोसा तमाम कांग्रेसियों को भी नहीं रहा होगा। उन नेताओं को भी नहीं रहा होगा जो बाहर से यहां आकर राहुल गांधी के लिए प्रचार कर रहे थे। रायबरेली ने गांधी परिवार से अपने रिश्तों पर एक बार फिर मोहर लगाई है लेकिन इस मोहर की इंक सोनिया गांधी के नाम पर लगाई गई स्याही से ज्यादा गाढ़ी है।

आप पूछेंगे कैसे? आइए! आंकड़ों की तरफ चलते हैं। सोनिया गांधी ने अपनी सास की कर्मभूमि को 2004 में अपनाया था। अपने के पहले अपने परिवार के हनुमान कहे जाने वाले कैप्टन सतीश शर्मा को 1999 में यहां चुनाव लड़ने के लिए भेजा। कैप्टन सतीश शर्मा ने एन केंद्र प्रकार रायबरेली और गांधी परिवार के पारंपरिक रिश्ते को अपनी जीत के आधार पर प्रमाणित किया। इसके बाद सोनिया गांधी रायबरेली में पहला चुनाव लड़ने के लिए 2004 में आईं।

गांधी परिवार की बहू सोनिया गांधी पर भी रायबरेली ने पहली बार अपना प्यार लुटाया था लेकिन इतना नहीं जितना अपने बेटे सरीखे राहुल गांधी पर। 2004 के चुनाव में सोनिया गांधी को 378107 मत मिले थे यह कुल पड़े मतों का 58.75 प्रतिशत था। सोनिया गांधी के के प्रति रायबरेली का यह पहला प्यार था।

सोनिया गांधी के सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने पर रायबरेली से पहली बार चुनाव लड़ने आए राहुल गांधी को रायबरेली ने हाथों हाथ लिया और मां सोनिया गांधी से 10 प्रतिशत अधिक मत पहले चुनाव में प्रदान किए। 10 प्रतिशत मतों का अंतर बहुत बड़ा होता है इसीलिए मैं कह रहा हूं कि रायबरेली ने राहुल पर अपना पहला प्यार मां से अधिक बरसाया है। यह भी सच है कि उन्होंने 2019 में मां सोनिया गांधी के जीत के अंतर को सबसे कम करने वाले भाजपा उम्मीदवार दिनेश प्रताप सिंह के वोट शेयर में 10 प्रतिशत की कमी लाकर मां का बदला ले लिया है।

हालांकि वर्ष 2009 के दूसरे चुनाव में सोनिया गांधी को 72 प्रतिशत से अधिक मत मिले थे। दोहरे लाभ के पद के आरोप लगने के बाद सोनिया गांधी द्वारा दिए गए स्थिति पर वर्ष 2006 में हुए उपचुनाव में सोनिया को रिकॉर्ड 80 प्रतिशत वोट मिले। राहुल गांधी को वोट शेयर के मामले में अभी मां सोनिया गांधी के रिकॉर्ड को छूने में काफी मशक्कत रायबरेली के विकास को लेकर करनी होगी वह भी तब जब राज्य और केंद्र में उनकी अपनी सरकार होने की संभावना अभी नहीं के बराबर है। कोई चमत्कार हो जाए समीकरण बदल जाए और कुछ नए साथी मिल जाए तो हो सकता है। भले ही केंद्र में गठबंधन की सरकार बन जाए और राहुल गांधी महत्वपूर्ण भूमिका में आ जाएं लेकिन यह इतना आसान भी नहीं।

कुछ भी हो राहुल गांधी को अब रायबरेली को रिटर्न गिफ्ट देने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। वह कैसे होगा? इसका ताना-बाना तो गांधी परिवार को ही बुनना पड़ेगा।

रायबरेली के विकास में अब कोई अगर मगर नहीं चलेगा क्योंकि सोनिया गांधी की सोबर्टी और स्वास्थ्य को देखते हुए रायबरेली ने उनकी 5 साल गैर मौजूदगी को सिरे से नजरअंदाज करके अपनी परिवारिकता को एक बार फिर प्रकट किया है। इसलिए भी राहुल गांधी की जिम्मेदारी अब और ज्यादा हो जाती है।

आम चुनाव

रमेश कुमार 'रिपु'

लेखक पत्रकार हैं।

अबकी बार बैसाखियों पर सरकार

अबकी बार चार सौ पार वाला नारा चार जून की शाम को बूढ़ा हो गया। इसी के साथ मोदी की राजनीति के चेहरे पर झुर्रियां आ गयी। और उनकी सत्ताई सियासत बैसाखी पर आ गयी। अपने मन की बात कहने वाले को अब दूसरे के मन की बात सुननी पड़ेगी। मोदी प्रधानमंत्री बनेंगे या फिर संघ किसी और को आगे करेगा। यह सवाल अभी दो -चार दिन सियासी गलियारे में दौड़ते रहेंगे। वैसे मोदी ने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को इस्तीफा दे दिया है। साथ ही मंत्रिमंडल भंग करने सिफारिश कर दी है। अब सबकी निगाहें टिकी है कि एनडीए का जो हिस्सा हैं,वो क्या मोदी को प्रधानमंत्री आसानी से बन जाने देंगे या फिर बारगनिंग करेंगे? चंद्रबाबू नायडू और नितिश के हाथ में सत्ता की चाबी है। सबसे बड़ा सवाल यह है, कि नितिश के साथ मोदी ने जो किया क्या वो भूल जाएंगे? चन्द्रबाबू नायडू को जेल में डाल दिया गया था। उनके खिलाफ जीएसटी, इंटेलिजेंस, आईटी, ईडी सहित कई एजेंसियां इसकी जांच कर रही हैं।

लोकसभा चुनाव के समय मोदी ने नितिश को मंच में साझा नहीं किया था। उनका सियासी अपमान खूब किये थे। क्या वो अब जब मोदी की जरूरत बने हुए है,उनके साथ जाएंगे? चंद्राबाबू नायडू और मोदी की विचार धारा में भिन्नता है। यही स्थिति नितिश की है। दोनों सेक्यूलर हैं। मोदी इस बार चुनाव में खुले मंच से मुस्लिमों की खिलाफत किये हैं। वो टोपी पहनते नहीं। उन्हें मुसलमानों का वोट चाहिए नहीं। वो जातीय गणना के खिलाफ है। मुस्लिम आरक्षण के खिलाफ हैं। ऐसे में ये दोनों नेता क्या मोदी को प्रधान मंत्री की शपथ आसनी से ले लेने देंगे। यदि ले भी लिये, तो कितने दिन मोदी प्रधान मंत्री की कुर्सी में रहेंगे? सबसे बड़ा सवाल यह है, कि गुजरात लॉबी से जिसने भी हाथ मिलाया,उसका सियासी वजूद खत्म हो गया। या खत्म करने में कोई कमी नहीं की गुजरात लॉबी ने। ऐसा कोई भी नहीं है,जिसे गुजरात लॉबी ने ठगा न हो। उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री कुर्सी से हटा दिया। उनकी पार्टी तोड़ दी। उनका सियासी सिंबल छीन लिया। शरद पवार के साथ भी यही हुआ। उनकी पार्टी तोड़ दी। अजीत पवार को ही असली एनसीपी बना दिया। नवीन पटनायक की आज जो सियासी हालत हुई,वो गुजरात लॉबी की वजह से हुई। मोदी ने केजरीवाल और हेमंत सोरेन को जेल भेज दिया। इंडिया गठबंधन में ऐसा कोई सियासी दल नहीं है,जो मोदी से प्रताड़ित न हो। ऐसे में इंडिया गठबंधन वाले मोदी का साथ देंगे,इसमें संदेह है। बीजेपी को इतनी सीट नहीं मिली कि मोदी प्रधान मंत्री अकेले अपने दम पर बन सके। मोदी की सोच और विचारधारा नायडू और नीतिश से मेल नहीं खाती। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि नीतिश उप प्रधान मंत्री अथवा गृहमंत्री के पद के साथ ही बिहार में जेडीयू का मुख्यमंत्री बने, इसकी मांग कर सकते हैं। यदि ऐसा हो भी गया तो मोदी को अपनी विचार धारा और लीडर शिप से अलग जाकर हर दिन नायडू और नीतिश को फोन करके,उनका सियासी हाल चाल पूछना पड़ेगा। यानी आज के सियासी हालात में नीतिश और नायडू किंग मेकर की भूमिका में है।

मौजूदा सियासी हालात मोदी के पक्ष में नहीं। यदि बात नहीं बनी तो संघ मोदी को किनारे कर नीतिन गडकरी को आगे कर सकता है। वैसे भी मोहन भागवत और मोदी में पिछले छह माह से कुछ ज्यादा ही छत्तीस का सियासी रिश्ता हो गया है। नागपुर में मोदी से मोहन भागवत और गडकरी बुलाने के बावजूद नहीं मिले। यह बात मोदी को बुरी लगी। और वो वहां से आने के बाद नड्डा के जरिये कहलवा दिये कि अब बीजेपी को संघ की जरूरत नहीं है। बीजेपी बड़ी पार्टी हो गयी है। बीजेपी अटल के दौर से आगे निकल गयी है। लेकिन चुनाव परिणाम बता रहे है,कि मोदी की बीजेपी,अटल की तरह हो गयी है। उसे भी सियासी बैसाखी की जरूरत पड़ गयी है। मोदी चट मंगनी पट व्याह चाहते है। ताकि संघ को मौका न मिले। मोदी की बैठक में अमितशाह, राजनाथ सिंह और जेपी नड्डा ही थे। गडकरी नहीं थी। मोदी फटाफट सरकार बन जाए,इसके फिराक में है। छोटे- छोटे राज्यों की पार्टी का समर्थन लेना मोदी की विवशता रहेगी। मेघालय, नागालैण्ड,मिजोरम,मणिपुर आदि राज्य की पार्टियों से अमितशाह और मोदी बात कर रहे हैं। यदि ये इंडिया गठबंधन के साथ चले गए तो मोदी के बुरे दिन आ जाएंगे। राफेल कांड,जस्टिस रोया की हत्या कांड,पीएम फंड घोटाला, इलेक्टोरल बांड, अडानी को बेची गयी संपत्तियां,उद्योगपतियों के माफ किये कर्ज आदि मामले उठेंगे। वैसे इंडिया गठबंधन ने दो टूक कह दिया है कि डीएमके के लिए दरवाजे खुले हैं।

केन्द्र में अबकी बार मोदी या फिर बीजेपी की नहीं बल्कि एनडीए की सरकार होगी। लेकिन बैसाखियों के सहारे चलने वाली सरकार के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहले की तरह ताकतवर नहीं रहेंगे। नितिश के पास बहुत विकल्प हैं। चंद्रबाबू नायडू और नितिश की विचारधारा मोदी से मेल नहीं खाती। इसलिए हमेशा संशय बना रहेगा सरकार के गिरने का। फ्लोर टेस्ट में मोदी को विश्वास मत हासिल करना होगा। अपना लोक सभा अध्यक्ष बनाना मोदी को इस बार कठिन हो सकता है। इतना ही नहीं रेड कारपोरेट पर मोदी को अपनी बैसाखी देने वालों का रेट ज्यादा रहेगा। वैसे भी नितिश ने छह माह पहले ही कह दिया था, कि जो 2014 में आए हैं,वो 2024 में नहीं आएंगे। यानी कह सकते हैं कि अबकी बार मोदी को प्रधानमंत्री बनने के लिए नायडू,नीतिश और मोहन

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

18 May 2024 - Page 4

अबकी बार अल्पमत सरकार?

नजरिया

रमेश कुमार 'रिपु'

भागवत तीनों की जरूरत है। तेजस्वी यादव की बात को दरकिनार नहीं किया जा सकता कि चचा चार जून के बाद कोई बड़ा फैसला ले सकते हैं।

नीतिश क्या इस बात को भूल जाएंगे मोदी उनकी पार्टी को तोड़ कर बीजेपी की सरकार बिहार में बनाने जा रहे थे। उनके लोगों को गुजरात लॉबी अपने पक्ष में कर लिया था। नीतिश को भनक लग गयी और वो राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव से हाथ मिलाकर मुख्यमंत्री बन गए। नीतिश मोदी को सबक सिखाने ममता बनर्जी,उद्धव ठाकरे,केजरी वाल,अखिलेश यादव सहित अन्य 28 दलों को एक मंच पर लाए। इंडिया की नीव की नीतिश ने ही रखी थी। यह अलग बात है कि बीते जनवरी में पाला बदल कर फिर एनडीए में शामिल हो गए। जाहिर है कि उनके लोग यानी उनकी पार्टी के सारे विधायक मोदी के साथ जाने के पक्ष में नहीं है। नीतिश सेक्यूलर विचारधारा के समर्थक है। ललन सिंह और विजेन्द्र प्रसाद का कहना कि नीतिश मोदी के साथ न जाए।

चन्द्रबाबू नायडू को आठ माह पहले स्किल डेवलपमेंट घोटाले (कोशल विकास मामला) पुलिस ने हिरासत में ले लिया था। दो महीने तक जेल में थे। आंध्र प्रदेश सरकार ने स्किल डेवलपमेंट एक्सीलेंस सेंटर की स्थापना के लिए सीमेंस और डिजाइन टेक के साथ 3356 करोड़ रुपए का समझौता किया था। समझौते के मुताबिक टेक कंपनी को इस प्रोजेक्ट में 90 फीसदी हिस्सेदारी वहन करनी थी। लेकिन यह बात आगे नहीं बढ़ी। आंध्र प्रदेश सरकार ने अपने हिस्से की हिस्सेदारी 371 करोड़ रुपए जारी कर दिया था। आंध्र की सीआईडी ने कौशल विकास के लिए जारी फंड को दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए कहा था, सीमेंसे प्रोजेक्ट की लागत को बढ़ा चढ़ाकर 3300 करोड़ रुपए कर दिया था। पुलिस का कहना था, कि इस प्रोजेक्ट की वास्तविक लागत 58 करोड़ रुपए थी। जीएसटी, इंटेलिजेंस,आईटी,ईडी सहित कई एजेंसियां इसकी जांच कर रही है। मोदी के समक्ष नायडू भी कई शर्तें रख सकते है।

एक समय नीतिश और नायडू दोनों मोदी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोले हुए थे। दोनों सियासत के मजे उस्ताद है। यानी अब मोदी अपनी मनमानी नहीं कर पाएंगे। सत्ता में जिनकी भागेदारी रहेगी,यदि उनकी नहीं सुनी गयी, तो हाथ खींच कर सरकार गिरा भी सकते हैं।

इंडिया गठबंधन का कहना है कि एनडीए घटक दलों के भी दरवाजे खुले है। वैसे शरद पवार नीतिश और चंद्रबाबू नायडू से बातें कर रहे हैं। ममता बनर्जी को राहुल गांधी कहेंगे कि वो नायडू और नीतिश से बातें करें। इसलिए कि ममता बनर्जी की इन दोनों नेताओं से पटती है। जयराम रमेश ने चन्द्रबाबू नायडू को 2014 में तत्कालीन प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह के उस वायदे को याद दिलाया जिसमें आंध्र प्रदेश को पांच साल तक स्पेशल स्टेटस देने की बात कही गयी थी। उन्होंने ट्वीट किया, जिसमें चन्द्र बाबू नायडू यह कह रहे हैं,कि सभी नेता मोदी से बेहतर हैं। चन्द्रबाबू नायडू ने कहाथा,कि आन्ध्र प्रदेश को स्पेशल स्टेटस नहीं मिलने की वजह से उन्होंने बीजेपी को छोड़कर कांग्रेस का हाथ पकड़ लिया था।

सुबह सवेरे के 18 मई के अंक में मैंने लिखा था कि अबकी बार अल्पमत सरकार। उसमें जिन बातों का जिक्र किया था, वो सारी बातें सटीक रही। बहरहाल केन्द्र में नयी सरकार के गठन तक नित्य कई बयान चौकाने वाले आएंगे। जैसा कि जेडीयू के एलएलसी अनवर खालिद ने कहा कि नितिश से बेहतर प्रधान मंत्री और कौन हो सकता है? वहीं आम आदमी पार्टी के नेता गोपाल राय ने नितिश और चन्द्र बाबू नायडू से सही फैसला लेने की अपील की है। नीतिश के 12 सांसद और चन्द्र बाबू नायडू के 16 सांसद मोदी के साथ नहीं जाते हैं तो एनडीए 264 पर आ जाएगी। अकेले बीजेपी की 240 सीट है। यानी उसे 32 सीट और चाहिए। इंडिया गठबंधन के पास 234 सीट है। बैठक में इंडिया गठबंधन फैसला करेगा कि वो विपक्ष में बैठेगा या फिर कोई खेला करना चाहिए।

विश्लेषण

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

उत्तर प्रदेश में धड़ाम से गिरा भाजपा का हिंदुत्व

देश का आम चुनाव परिवर्तन की राजनीति का संदेश है। इस चुनाव को जनता ने अपने मुद्दों के साथ लड़ा है। वह धर्म की राजनीति करने वाली भाजपा जैसी पार्टी को नया संदेश दिया है। सरकार कोई भी बनाये या सत्ता किसी के हाथ में हो, लेकिन अब आम लोगों के हित की बात होनी चाहिए। जनता ने धर्म और जाति के खिलाफ जनादेश दिया है। देश की सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी बहुमत का आंकड़ा अकेले बल पर नहीं छू पाई। मोदी की करिश्माई राजनीति का जादू अब खत्म होता दिख रहा है। वाराणसी में साल 2014 और 2019 में जीत के अंतराल का जो गणित था वह इस बार कायम नहीं रहा। राहुल गाँधी उनसे अधिक मतों से जीत हासिल किया। वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुनाव भले जीत गए, लेकिन यह जीत इतनी बेहतर और शानदार नहीं कहीं जा सकती। नैतिक रूप से इण्डिया गठबंधन के उम्मीदवार अजय राय मोदी के सामने हारकर भी जीते हैं।

हिंदुत्व की उग्र राजनीति का उत्तर प्रदेश से सफाया हो गया है। दो लड़कों की जोड़ी ने यहाँ कमाल कर दिखाया है। भाजपा को उत्तर प्रदेश से सबसे बड़ी उम्मीद थी, लेकिन राहुल गाँधी और अखिलेश यादव ने उस उम्मीद को तोड़ दिया है। इस जोड़ी ने जो काम साल 2019 में नहीं कर पाया उसे 2024 में अंजाम तक पहुंचा दिया। मोदी और योगी का जादू नहीं चल पाया है। यहाँ की जनता ने हिंदुत्व की राजनीति को सिरे से नकार दिया है यह अपने आप में यह बड़ा संदेश है। संविधान, आरक्षण और बेरोजगारी की जंग ने धर्म की राजनीति को बड़ा संदेश दिया है। उत्तर प्रदेश के युवाओं ने राहुल गाँधी के रोजगार के मुद्दे को दिल से लिया और दो लड़कों की जोड़ी पर भरोसा जताया। सबसे बड़ा संदेश अयोध्या ने दिया है फैज़ाबाद सीट ने उसे आइना दिखाया है। ओबीसी और दलित और मुस्लिम वोट ने कमाल कर दिखाया है। ओबीसी वोट भाजपा के हाथ से फिसल गया। यह भाजपा के लिए चुनौती है।

पूर्वांचल में भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। भाजपा -राजभर की जोड़ी कुछ नहीं कर पाई। अगर बहुजन समाज पार्टी खुद को 'सेफ पॉलिटिक्स' की राजनीति से अलग रहते हुए इंडिया गठबंधन का हिस्सा होती तो उत्तर प्रदेश में भाजपा की जमीन खत्म हो गई होती और बसपा का नया जीवन मिल जाता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए बड़ा संदेश है। इस जनादेश से साबित हो गया है कि अब राजनीति दूसरी तरफ मुड़ रहीं है।

अगर भारतीय जनता पार्टी एनडीए गठबंधन के साथ सरकार बनाएगी लेकिन सरकार का भविष्य क्या होगा कहना मुश्किल है। भाजपा अब तक जो खुल्ला खेल-खेल रही थी वह नहीं खेल पाएगी। उसकी उम्मीद पर पानी फिर गया है। वह खुद बहुमत का आंकड़ा नहीं छू पाई। कहा जाता है उत्तर प्रदेश दिल्ली की राजनीति का रास्ता तय करता है उत्तर प्रदेश में ही भाजपा को आइना दिखा दिया। इसके पीछे खुद भाजपा संगठन की आंतरिक राजनीति रही है।

2024 का जनादेश कांग्रेस के लिए नया संदेश लेकर आई है। राहुल गांधी के विजन को कटघरे में खड़ा करने वाली भाजपा खुद कटघरे में खड़ी है। अब तक जितनी आक्रामकता से साल 2014 और 2019 में बहुमत पाकर सरकार चलती रही है हाल में वैसा कुछ नहीं कर पाएगी। सरकार वह भले बना ले, लेकिन कुछ ख़ास नहीं कर पाएगी। क्योंकि संसद में विपक्ष की अच्छी ख़ासी तादाद होगी। भाजपा तमाम ऐसे बिल लाना चाहेगी लेकिन अब डगर मुश्किल हो गई है। क्योंकि अब बीजेपी को गठबंधन धर्म भी निभाना पड़ेगा।

भाजपा ने उड़ीसा और आंध्र में भले अच्छा खासा प्रदर्शन किया, लेकिन उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्य उसके हाथ से निकल गया। उसका सियासी खेल बिगाड़ दिया है। पश्चिम बंगाल में जिस तरह ममता बनर्जी के खिलाफ हिंदुत्व को लेकर उग्र राजनीति की गई उसका परिणाम सामने है। भाजपा ममता बनर्जी पर जितनी तीखी और हमलावर हुई बंगाल में ममता की जमीन उतनी ही मजबूत हुई।फ़िलहाल यह चुनाव आम जनता ने लड़ा है अपने अधिकारों को लेकर लड़ा है। उसने बेरोजगारी, महंगाई और आरक्षण जैसे मुद्दों को लेकर मतदान किया।

भाजपा मोदी के चेहरे पर ही रह गई। फिलहाल जिस अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हुआ और जो हिंदी पट्टी हिंदुत्व का गढ़ कही जाती है। भाजपा को विपक्ष ने पटकनी दिया। राहुल गाँधी एक नए अवतार में उभरे है। फिलहाल जनादेश पूरी तरह सम्मान किया जाना चाहिए। सरकार एनडीए बनाए या इंडिया उसमें आम आदमी के हितों का पूरा तरह ख्याल रखना चाहिए। बढ़ती महंगाई बेरोजगारी और आम आदमी के अधिकार की बात होनी चाहिए। यह भाजपा और कांग्रेस के लिए बड़ा संदेश है।

कलेक्टर ने बस स्टैंड का किया औचक निरीक्षण

हटवाया अतिक्रमण, अवैध कब्जाधारियों पर किया जुर्माना

बैतूल। निर्वाचन प्रक्रिया को पूरा हुए 12 घंटे भी नहीं गुजरे और कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी अतिक्रमण के अधूरे काम को पूरा करने निकल पड़े। श्री सूर्यवंशी ने कोठीबाजार स्थित बस स्टैंड का बुधवार को औचक निरीक्षण किया। लोकसभा निर्वाचन की प्रक्रिया के चलते कलेक्टर ने अपने 6 माह कार्यकाल में ही पहले अतिक्रमण, रेत उत्खनन, महामारी के बुखार पीड़ित ग्रामवासी हो या फिर जल संकट की समस्या हो तुरंत मौके पर पहुंचकर कार्यवाही के परिणाम ही सामने आते चले गए। व्यक्ति विशेष द्वारा बल पूर्वक एवं छल पूर्वक किए जाने वाले कार्यों से जनमानस को राहत मिली।

सराय कॉम्प्लेक्स पहुंचे कलेक्टर

कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बस स्टैंड परिसर स्थित सराय कॉम्प्लेक्स की दुकानों का निरीक्षण किया। आवंटित दुकान में फ्रूट व्यापारी द्वारा अपनी सीमा से बाहर अतिक्रमण कर फ्रूट मार्केट लगा रखा था। उन्होंने तत्काल सीएमओ श्री भदौरिया को चालानी कार्रवाई के निर्देश दिए। फलों के खाली क्रेन जो कॉम्प्लेक्स के प्रवेश द्वार पर एकत्रित कर रखे थे उन्हें जप्त कर चालान बनाने के लिए कहा। काम्पलेक्स के अंदर एमके मोबाइल शॉप द्वारा फ्लेक्स, विज्ञापन बोर्ड, कॉरिडोर में रखे थे। उन्हें हटवाकर एक-एक हजार के अर्थदंड से दंडित किया।

रूफटॉप का होगा कायाकल्प लगेगी लिफ्ट

कलेक्टर ने सराय काम्पलेक्स की रूफ टॉप का निरीक्षण किया। उसे दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए। रूफटॉप के टेंडर करने और उसमें फिर लिफ्ट के लिए प्रस्ताव के लिए सीएमओ भदौरिया को निर्देश दिए। कॉम्प्लेक्स में स्थित डॉ.कापसे का दवाखाना बंद होने के बाद भी अतिक्रमण कर रखा था, जिससे कॉरिडोर आने जाने वाले लोगों को चलने में परेशानी हो रही थी।

होटल स्टूडेंट का शटर डाउन: कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बस स्टैंड काम्पलेक्स स्थित होटल स्टूडेंट में भारी गंदगी एवं पेयजल व्यवस्था, खाने की क्वालिटी और बस स्टैंड की कॉरिडोर में 25 बेंच लगाकर भोजनालय चला रहा था। अतिक्रमण एवं भारी गंदगी के कारण उन्होंने सीएमओ को होटल में ताला लगाने के निर्देश दिए और शटर डाऊन करवाया गया। होटल के पिछले भाग में शराब की खाली बोतलें जप्त कर कार्रवाई की गई।

नेताजी करें हस्तक्षेप तो मुझे बताएं

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने पूरे बस स्टैंड क्षेत्र का मुआयना किया। बस स्टैंड के पिछले भाग में ट्रेवल्स के बोर्ड, ट्रेवल्स की गुमटियों में चल रहे आफिस जब्त करवाएं। पिछले भाग में चल रहे एक होटल में भी गंदगी का साम्राज्य था। बस स्टैंड स्थित होटल को हटाने के निर्देश पर अधिकारियों ने कहा कि पार्षद नेताजी कार्यवाही नहीं करने देते। कलेक्टर ने कहा जब भी कोई ऐसे नेताजी लीगल कार्रवाई करने नहीं दे तो मुझसे मिलवाएं।

ग्राम जीन दनोरा पानी लीकेज की शिकायत पर कलेक्टर ने स्पॉट का किया निरीक्षण

बैतूल। ग्राम जीन दनोरा में पाइप लाइन में लीकेज आ जाने के कारण कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने स्पॉट पर पहुंचकर डेमेज पाईप लाईन का निरीक्षण किया। निर्माण कार्य के दौरान पाइप लाइन क्षतिग्रस्त हो जाने से कलेक्टर ने निर्माणकर्ता एजेंसी बंसल से ही पाईप लाईन को तुरंत दुरूस्त कराने के निर्देश दिए थे। इस दौरान उनके साथ मुख्य नगर पालिका अधिकारी भदौरिया भी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि बंसल कंपनी द्वारा फोरलेन स्थित ग्राम दनोरा ब्रिज के पास हाईटेंशन लाइन के लिए और ग्राउंड केबल डालने का काम किया जा रहा है। मशीन द्वारा ड्रिलिंग करते समय पाइप लाइन क्षतिग्रस्त हो जाने से बैतूल शहर में पेयजल वितरण का काम नहीं किया जा सका। कलेक्टर ने बंसल कंपनी के अधिकारियों एवं नगर पालिका द्वारा दुरुस्ती कार्य को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए। यदि उसमें समय लगता है वहां शहरवासियों को पानी के टैंकर आदि से सप्लाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि माचना डैम में भी पानी का अभाव है। इसलिए बैराज से ही पानी की सप्लाई दी जा रही थी। लीकेज की सूचना मिलते ही नगर पालिका ने तुरंत पानी की सप्लाई बंद कर दी। बताया जाता है कि फोरलेन से नीचे की तरफ जमीन के अंदर ड्रिलिंग की जा रही थी। कलेक्टर ने कहा कि ग्रीष्म काल में वैसे ही पानी की बहुत जरूरत होती है। काम को त्वरित गति से पूरा करें। जिससे पेयजल की आपूर्ति निर्बाध जारी की जा सके।

पर्यावरण का महत्व समझें, इसलिए बच्चों से करवाया पौधारोपण

बैतूल। पर्यावरण के महत्व को भावी पीढ़ी को समझना होगा। इसके लिए उन्हें जागरूक करना होगा। इसी उद्देश्य को लेकर विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गौतम सेवा समिति द्वारा पावन धाम कॉलोनी चक्कर रोड में 21 पौधों का पौधा किया गया। जिसमें विशेष तौर पर बच्चों से पौधे लगवाए गए जिसके पीछे मंशा थी कि बच्चे पर्यावरण को करीब से जाने और पहचाने। इस पौधारोपण कार्यक्रम में जिसमें चीकू पारिजात मौलश्री कदम नीम आम इत्यादि के पौधे लगाए गए। समिति के संयोजक अनिल झाम ने बच्चों सहित उपस्थित लोगों को पौध संरक्षण की शपथ भी दिलाई। श्री झाम ने बताया कि भविष्य में और अधिक से अधिक पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। बच्चों ने पौधा रोपण में बढ़-चढ़ कर पूरे उत्साह से हिस्सा लिया।

जामा मस्जिद बैतूल में जनाजे की नमाज पढ़ाने से इनकार, भेदभाव का आरोप

- राज्य मानव अधिकार आयोग, वक्फ बोर्ड सहित कलेक्टर से की शिकायत, कार्रवाई की मांग

बैतूल। जामा मस्जिद बैतूल में जनाजे की नमाज पढ़ाने से इनकार करने का आरोप लगाते हुए महावीर वार्ड, निवासी शेख नाशिर पिता शेख नजीर ने राज्य मानव अधिकार आयोग, वक्फ बोर्ड सहित कलेक्टर से शिकायत की है। शिकायत आवेदन में उन्होंने आरोप लगाया कि उनके पिता शेख नजीर के जनाजे की नमाज बैतूल जामा मस्जिद में नहीं पढ़ाई गई। शेख नाशिर ने बताया कि उनके पिता का निधन 18 मार्च 2024 को हो गया था। जब वे और उनके रिश्तेदार जनाजे को लेकर सुबह 10 बजे जामा मस्जिद पहुंचे, तो मस्जिद के इमामों ने जनाजे की नमाज पढ़ाने से इंकार कर दिया।

शेख नाशिर ने अपनी शिकायत में बताया कि उन्होंने जामा मस्जिद अंजुमन इस्लामियां कमेटी के अध्यक्ष पासू भाई से जनाजे की नमाज पढ़ाने के लिए अनुरोध किया था। पासू भाई ने कहा कि वे सुन्नी बरेलवी हैं और जामा मस्जिद के इमाम सिर्फ सुन्नी मुसलमानों के जनाजे की नमाज पढ़ाएंगे। उन्होंने बताया कि शेख नाशिर और उनके पिता शिया मुसलमान हैं, इसलिए उनकी नमाज नहीं पढ़ाई जाएगी। पासू भाई ने इमामों को निर्देश दिया था कि बिना उनकी अनुमति किसी अन्य मसलक के जनाजे की नमाज न पढ़ाई जाए। शेख नाशिर ने कहा, मेरे पिता ने अपनी पूरी जिंदगी जामा मस्जिद बैतूल में ही नमाज पढ़ी और सुन्नी मसलक को अपनाया था। मेरा निकाह भी जामा मस्जिद बैतूल के सुन्नी इमाम ने ही पढ़ाया था। उन्होंने आरोप लगाया कि पासू भाई उनके वालिद के साथ भेदभाव कर रहे हैं, जबकि अनजान लाशों की भी जनाजे की नमाज पढ़ाई जाती है, जिनके रिश्तेदार का पता नहीं होता। शेख नाशिर ने कहा, च्च्मुझे अपने मुसलमान होने पर अफसोस हो रहा है कि मैं इस समाज में पैदा हुआ, जहां मेरे वालिद का जनाजा नहीं पढ़ाया जा रहा है। मेरी मां की तबीयत भी और ज्यादा खराब हो गई है। अब अगर मेरी मां का भी इंतकाल हो जाए, तो कौन उनकी जनाजे की नमाज पढ़ाएगा ?

कलेक्टर से हस्तक्षेप की मांग-

शेख नाशिर ने जिला कलेक्टर से निवेदन किया है कि इस शिकायत को गंभीरता से लेते हुए वर्तमान कमेटी को तत्काल हटाया जाए और मुस्लिम समाज में अध्यक्ष द्वारा फैलाए जा रहे भेदभाव और फितने को खत्म किया जाए।

नागपुर में यात्री का मोबाइल चुराकर ट्रेन में चढ़ा युवक बैतूल में धराया

एफआईआर की सतर्कता से पकड़ाया

बैतूल। आर पी एफ थाना नागपुर रेलवे स्टेशन पर 3 जून को एक व्यक्ति ने अज्ञात व्यक्ति द्वारा मोबाइल चुराकर भागने की सूचना दी। सूचना मिलते ही उप निरीक्षक एच एल मीना एवम उनकी टीम तुरंत हरकत में आकर तुरंत सीसीटीवी फुटेज खंगाले।संदिग्ध व्यक्ति रेलवे स्टेशन नागपुर से ट्रेन नंबर 22669 में चढ़ते दिखाई दिया जिसे शिकायत कर्ता द्वारा पहचाना लिया गया।आरोपी की जानकारी नागपुर आरपीएफ ने मोबाइल के माध्यम से आरपीएफ थाना प्रभारी बैतूल राजेश बनकर को दी।जिसके आधार पर श्री बनकर ने अपनी टीम को अलर्ट किया। टी आई ने प्रधान आरक्षक संतोष पटेल और सहायक उप निरीक्षक दीपक देशमुख के साथ आरोपी की ट्रेन में खोजबीन की।

प्रधान आरक्षक संतोष पटेल ने उक्त आरोपी को पकड़ने के बाद पूछताछ की। आरोपी ने अपना नाम नीतीश कुमार पिता राजो यादव उम्र 20 वर्ष, निवासी ग्राम गोसाई, पोस्ट- धनक डोभ, तह. बाद, जिला पटना, बिहार बताया। आरोपी ने पूछताछ के दौरान पहले तो आनाकानी किया बाद में उसने मोबाइल चोरी करने का अपराध कबूल किया और चोरी किया ओप्पो कंपनी मोबाइल कीमत अंदाजन 25000 रु पेश किया। आरोपी को मोबाइल के साथ पड़कर आरपीएफ थाना बैतूल में लाकर अग्रिम उचित कार्रवाई हेतु तुरंत ट्रेन से नागपुर के लिए प्रधान आरक्षक संतोष पटेल ने नागपुर में ले जाकर उप निरीक्षक मीना के समक्ष प्रस्तुत किया। जी आर पी नागपुर द्वारा अपराध क्रमांक 634/2024 आईपीसी की धारा 379 में शामिल किया गया। उपरोक्त कार्यवाही मनोज कुमार, वरिष्ठ मण्डल सुरक्षा आयुक्त आरपीएफ नागपुर एवं श्रीकुमार कुरूप, स.सु.आ.आरपीएफ नागपुर के मार्गदर्शन मे की गई।

ऑक्सीजन कम और कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ रही है

बैतूल। ब्रह्मा कुमारीज आनंद सरोवर खंजनपुर स्थित गार्डन में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। ब्रह्माकुमारी से जुड़े सभी अनुयायियों ने पौधारोपण किया और पौधों को पालने का संकल्प भी लिया। 'एक व्यक्ति एक पेड़' लगाने, उसे संवर्धित करने का संकल्प लिया। पर्यावरण बचाने की इस मुहिम में सभा को संबोधित करते हुए बीके नंदकिशोर ने बताया कि पर्यावरण बहुत प्रदूषित हो चुका है वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि अपने उच्चतम स्तर पर है। आज हवा में ऑक्सीजन कम होती जा रही है कार्बन डाइऑक्साइड बढ़ रही है हमें वृक्ष लगाकर ऑक्सीजन लेवल को बढ़ाना है और हवा में घुलित जहर को खत्म करना होगा। जिसमें कम से कम डीजल और पेट्रोल के वाहनों का प्रयोग करें, प्लास्टिक थैलियों का प्रयोग ना करें, पौधों का पालना करें तथा पानी के स्रोतों को बचाएं उनके आसपास स्वच्छता रखें। अनेक प्रकार से पर्यावरण की रक्षा का संकल्प बीके सविता बहन ने सबको दिलाया इस अवसर पर खंजनपुर के गोपाल सरेआम, राम प्रसाद सोनी, प्रदीप ठाकुरद्वारे और अनेक ब्रह्माकुमारी से अनुयायी मौजूद थे।

बताईए कलेक्टर साहिबा नगर में होर्डिंग कैसे लग गये.. आचार संहिता तो लागू है !

नर्मदापुरम(नागरिक सवाल कर रहे कलेक्टर मैडम ये बताइये परिणाम कल आए है और मुख्यालय सहित जिले में लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के साथ ही होर्डिंग लगने लगें कैसे..? प्रत्याशी विजयी घोषित होते ही अचानक सभी नवनिर्वाचित सासंद से अपनी नजदीकियां बताना चाह रहे और होर्डिंग लगा रहे क्या यह आचार संहिता का उल्लंघन नहीं..? कहा और सुना जाता है कि आचार संहिता में प्रशासन सर्वेसर्वा होता है। फिर नियम विरुद्ध कार्य क्यों और कैसे किस की शह पर हो रहे.. नगरपालिका ने भी आज दिनांक तक अवैध बता रहे होर्डिंगों को ना तो निकाले न हटाएं है। जबकि आने वाले दिनों बरसात के आंधी पानी में होर्डिंग के गिरने पढ़ने की संभावना वर्षा पूर्व होने वाली आंधी पानी से ज्यादा बनी हुई है। ऐसे में होने वाली दुर्घटना का जिम्मेदार कौन होगा..

तीन थानों की पुलिस को चकमा देकर भाग गए गौ तस्कर

- मिलानपुर टोल प्लाजा और ससुन्द्रा चेक पोस्ट को तोड़ा

बैतूल। जिले में गौ तस्करी थमने का नाम नहीं ले रही है। मंगलवार की रात को शातिर गौ तस्कर पुलिस को चकमा देकर भाग गए और पुलिस हाथ मलते रह गई। तस्करों ने मिलानपुर टोल प्लॉजा और ससुन्द्रा चेक पोस्ट तोडकर वाहन लेकर भाग गए। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय ने बताया कि मंगलवार की रात को 1 बजे सूचना मिली थी कि एक पिकअप वाहन में पाढर क्षेत्र के जंगल से गौवंश को भरकर महाराष्ट्र कत्लखाने ले जाया जा रहा है। सूचना के आधार पर संगठन के जिलाध्यक्ष अनुज राठौर सहित अन्य साथियों ने वाहन को पकड़ने की योजना बनाई। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के कार्यकर्ताओं ने उक्त पिकअप वाहन का पीछा किया। फोरलेन तितली चौक पर पकडने की कोशिश की, लेकिन तस्कर संगठन के लोगों को चकमा देकर भागने में सफल हो गए। दीपक मालवीय ने बताया कि गौवंश तस्करी की जानकारी बैतूलबाजार, सांईखेड़ा थाना और मुलताई थाना पुलिस को दी गई। संगठन के लोग पिकअप वाहन का पीछा करते हुए जा रहे थे, लेकिन तस्करों ने मिलानपुर टोल प्लॉजा और ससुन्द्रा चेक पोस्ट को तोड़ते हुए वाहन दौड़ाते हुए भाग गए। पुलिस को सूचना देने के बावजूद भी गौ तस्कर वाहन लेकर फरार होने में कामयाब हो गए और तीनों थानों की पुलिस हाथ मलते रह गई। पुलिस ने सूचना मिलते ही सक्रियता दिखाई होती तो तस्कर पुलिस की गिरफ्त में होते। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के कार्यकर्ताओं ने मुलताई, पट्टन तक उक्त वाहन तस्करों की गाड़ी का पीछा किया, लेकिन तस्कर भागने में कामयाब हो गए। श्री मालवीय ने बताया कि पाढर और शाहपुर क्षेत्र में कुछ गौ तस्कर है जो हमेशा की तस्करी करते रहते है। इनकी लिस्ट पुलिस को दी गई है, लेकिन पुलिस ने इनके खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। नतीजा यह है कि जिले में तस्करी का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है।

जन्मदिवस पर पौधारोपण और 501 पौधों का वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया

नालछा (धार)। प्रतिवर्षनुसार इस वर्ष भी भाजपा

जिला मंत्री एवं नालछा जनपद सदस्य पवन कुशवाह द्वारा अपने जन्मदिवस के अवसर पर नगर के गंगेश्वर महादेव मंदिर पर प्रात: पूजन अर्चन और रुद्राभिषेक कर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद लिया .और फिर परंपरागत रूप से प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी अपने जन्मदिवस पर पौधारोपण कर शमी और बिल्वपत्र के 501 पौधो का वितरण किया गया।. इस दौरान भाजपा मंडल महामंत्री विनोद ठाकुर,वरिष्ठ कैलाश कामदार,संतोष राठौड़,अशोक मीरदवाल,भूतपूर्व सरपंच भोजपाल दरबार,चंद्रशेखर कुशवाह,नालछा सरपंच मोहन डावर,उपसरपंच राकेश कुशवाह,प्रभु बारिया,रूपसिंह मंडलोई,सुरेश दायमा, सत्यनारायण सेन,युवा मोर्चा से निखिल ग्वाल,राहुल राठौड़, सन्नी चौहान,सोनू मंडवाल,जीवन दायमा,अनसिंह मालीवाड,सीताराम ठाकुर,वार्ड पंच शुभम बड़गुर्जर,राकेश कुशवाह,रामेश्वर भाभर,राजेश मलैया.... सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

मक्का मदीना की यात्रा पर गई नन्ही अफसीन

देवास। मक्का मदीना की 40 दिवसीय हज यात्रा पर

शहर की एक नन्ही बालिका अफ्सीन भी अपने दादा अय्यूब शेख और दादी बेबी शेख के साथ गई है। शहर के विंध्याचल स्कूल में कक्षा सात में पढ़ने वाली अफसीन जिले से हज यात्रा पर जाने वाली सबसे छोटी बिटिया है।

2000 पौधे मियावाकी पद्धति से औद्योगिक क्षेत्र में लगाए गए

देवास। विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून को 2000 पौधे मियावाकी पद्धति से औद्योगिक क्षेत्र में लगाए गए। कार्यक्रम कमिंस इंडिया फाउंडेशन के मार्गदर्शन में किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि देवास कलेक्टर ऋषभ गुप्ता, डीएफओ मिश्रा जी, एस.डी.ओ. श्री शुक्ला, जी.एम.डी.आई. सी. मंगल सर, जिला पंचायत सीईओ हिमांशु प्रजापति एवं एसोसिएशन ऑफ़ इंडस्ट्रीज देवास के खनूजा जी मुख्य रूप से उपस्थित थे। पौधारोपण अभियान में कलेक्टर ऋषभ गुप्ता ने कमिंस कंपनी के 133 एम्प्लॉई को बधाई दी गई एवं अमृत संचय योजना द्वारा पानी बचाने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। कमिंस कंपनी द्वारा पंकज तिवारी ऑपरेशन हेड देवास द्वारा सभी का स्वागत किया एवं एनवायरमेंट लीडर संतोष शर्मा द्वारा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अनुपम एनजीओ के शैलेंद्र पाटिल ने किया।

जन अभियान परिषद ने पौधा लगाकर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

जीवन में आएगी खुशहाली जब आपके पास होगी हरियाली - पर्यावरणविद् डॉ. पाटीदार

धार। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् के नेतृत्व में नवांकुर चयनित समिति खरसोड़ा द्वारा पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर पर्यावरणविद डॉ अमृत लाल पाटीदार, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, जन अभियान परिषद् नवांकुर चयनित संस्था अध्यक्ष विकास शर्मा खरसोड़ा, शांतीलाल शर्मा, पूर्व सरपंच लूणाराम डाबी, खरसोड़ा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक लक्ष्मीनारायण पाटीदार मोहन डाबी आदि उपस्थित रहे!

पर्यावरणविद डॉ अमृत लाल पाटीदार ने पेड़ों के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया। भारत समेत पूरे विश्व में प्रदूषण काफी तेजी से फैल रहा है. इस वजह से हमारी प्रकृति को

काफ़ी नुकसान हो रहा है. प्रकृति को प्रदूषण से बचाने के लिए पर्यावरण दिवस को मनाया जाता है. इस दिन लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूक किया जाता है और प्रदूषित होने से बचाने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने कहा कि एक पेड़ 4 ऑक्सीजन सिलेंडर की पूर्ति करता है। हरी-भरी वसुंधरा से ही वनस्पति, जीव, पशु-पक्षी सुरक्षित हैं। हम धरती को हरा भरा बनाने के लिए कुछ काम करे उसमे सबसे बडा यह है कि हम जब भी कोई खुशी का मौका हो तो एक पोधा लगाए ओर उस पौधे की देखभाल तब तक करे व पौधा पेड़ बन जाए जो भी पेड़ कट रहे हो उसे रोके रोक नही सकते हो तो टोक तो सकते हो। जीवन में आएगी खुशहाली जब आपके पास होगी हरियाली।

जल बचाओ ,जीवन बचाओ के उद्देश्य को लेकर ,नालछा में 'नमामि गंगे' अभियान का शुभारंभ कर किया गया श्रमदान

नालछा। पूरे प्रदेश में 5 जून पर्यावरण दिवस से लेकर 16 जून गंगा दशमी तक नमामि गंगे अभियान चलाया जाएगा जिसमे प्रदेश की समस्त पंचायत क्षेत्रों में आने वाले जल स्त्रोत नदी,तालाब, कूआ,बावड़ी सहित अन्य जल स्त्रोतों के संरक्षण,सौंदर्यकरण एवं पुनर्जीवन हेतु श्रमदान कर जनसहयोग से कार्य किए जाएंगे.इसी कड़ी में जनपद पंचायत नालछा मुख्यालय की ग्राम पंचायत नालछा में नमामि गंगे अभियान का शुभारंभ किया गया।

सर्वप्रथम नालछा की मां गंगा कही जाने वाली नदी मां नलकच्छ गंगा पर जनप्रतिनिधियों और ग्राम के नागरिकों और जनपद पंचायत नालछा व ग्राम पंचायत नालछा के अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा सामूहिक रूप से श्रमदान कर गंगेश्वर महादेव मंदिर स्थित प्राचीन घाट पर साफ- सफाई कर वर्षो से गाद के दबी सीढ़ीयो को वापस अपने मूल स्वरूप में ला दिया.वही नालछा के पुलिस थाना परिसर स्थित प्राचीन मीठी बावड़ी जहां पर ग्रामवासी अपने गृह पर शुभ अवसरों के दौरान गंगा जल भरने हेतु आते है और मीठी बावड़ी का पवित्र जल कलश में भरकर और उसमे गंगा जल डालकर फिर अपने घरों तक गंगाजल कलश यात्रा लेकर जाते हे वहा मीठी बावड़ी के गहरीकरण और संरक्षण कार्य का भी पूजन अर्चन

कर शुभारंभ किया गया।

इस दौरान भाजपा जिला मंत्री पवन कुशवाह,नालछा जनपद पंचायत सीईओ संदीप डावर,भाजपा मंडल महामंत्री विनोद ठाकुर,वरिष्ठ संतोष राठौड़,अशोक मीरदवाल,भूतपूर्व नालछा सरपंच भोजपाल दरबार,चंद्रशेखर कुशवाह,नालछा सरपंच मोहन डावर,उपसरपंच राकेश कुशवाह,प्रभु बारिया,रूपसिंह मंडलोई,सुरेश दायमा,सत्यनारायण सेन,युवा मोर्चा से निखिल ग्वाल,राहुल राठौड़,सन्नी चौहान,सोनू मंडवाल,जीवन दायमा,अनसिंह मालीवाड,सीताराम ठाकुर,वार्ड पंच शुभम बड़गुर्जर,राकेश कुशवाह,रामेश्वर भाभर,राजेश मलैया,सहायक यंत्री नीता भंवर,बीपीओ दशरथ जाट सीग्गा,एपीओ प्रवीण भाटी,उपयंत्री संदीप गंगले, सुशील मुद्गल,अमिता पगारे,संतोष शैलार, कमल किशोर मालवीय,नालछा पंचायत से सचिव जगदीश गिरवाल,माया निनामा,रितेश मावी सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जिलाधीश की उपस्थिति में सनफार्मा ने किया पौधारोपण

देवास। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में शंकरगढ़ पहाड़ी पर जिलाधीश ऋषव गुप्ता की उपस्थिति में सनफार्मा उद्योग की टीम ने सामाजिक संस्था एक्ट ईव फाउंडेशन के समन्वय से पौधा रोपण किया। सनफार्मा के वरिष्ठ प्रबंधक विवेक भार्गव और एक्ट ईव फाउंडेशन अध्यक्ष मोहन वर्मा ने बताया कि शंकरगढ़ पहाड़ी पर वन विभाग और प्रशासन द्वारा सुझाए स्थल पर सनफार्मा की टीम ने पौधा रोपण किया। इस अवसर पर जिलाधीश ऋषव गुप्ता, वन अधिकारी प्रदीप मिश्रा, जिला पंचायत सीईओ हिमांशु प्रजापति, एसडीओ संतोष शुक्ला, जिला उद्योग केन्द्र प्रबंधक मंगल रेकवाल ने भी शीशम, करंज, नीम जैसे पौधे रोपे। जिलाधीश ने इस अवसर पर सभी से अनुरोध किया कि इस आने वाले बरसात के मौसम में अधिक से अधिक पौधा रोपण कर देवास को हरा भरा बनाने में सहयोग करें।

जल धारा परियोजना क्षेत्र में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

रैली के साथ निकाली गयी जलयात्रा स्वचलित मौसम केन्द्र का किया भूमि पूजन

धार । जिले के विकास खण्ड धरमपुरी विकास खण्ड में क्रियान्वित की जा रही जल धारा परियोजनान्तर्गत ग्राम सिमराली में विश्व पर्यावरण दिवस पर भव्य आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने नारे के साथ रैली, महिलाओं ने पानी भरे कलश के साथ जलयात्रा निकालकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डीडीएम नाबार्ड सागरिका रही , प्रमुख अतिथि सिप्ला फाउण्डेशन के प्रबन्धक महेश सोमानी, क्रियान्वयन संस्था बाएफ लाइव्लीहुड्स म.प्र. के राज्य प्रमुख पवन पाटीदार, सीटीपीई-एनआरएम रवि कोते, सीटीपीई-एग्रोबायोडायवर्सीटी संजय पाटील, प्रेम

ओहरिया वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, कृषि रहे अतिथियों द्वारा उद्बोधन में पर्यावरण के हो रहे दुष्प्रभावों को रोकने तथा पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारी प्रदान की गयी। देशी बीज संरक्षण के क्षेत्र में पहल करने हेतु संजय पाटील के मार्गदर्शन में विभिन्न प्रकार के देशी बीजो की प्रदर्शनी लगाकर जनसमुदाय को इसके संरक्षण एवं वृद्धि के बारे में तकनीकी जानकारी से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने स्थानीय समुदायों को जलग्रहण तकनीकों और सतत कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूक किया। इसके पश्चात् सिमराली में परियोजना के तहत स्थापित किये जा रहे स्वचलित मौसम स्टेशन का भूमिपूजन अतिथियों के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जिससे उन्हें पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व का ज्ञान हुआ। जलस्रोतों की सफाई और उनकी सुरक्षा के लिए विशेष गतिविधियों के क्रियान्वयन पर जोर दिया गया। सामुदायिक कार्यकर्ताओं ने समुदाय को जागरूक किया कि स्वच्छ जल स्रोत कैसे पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। इस आयोजन ने सभी को यह संदेश दिया कि पर्यावरण की सुरक्षा सामूहिक जिम्मेदारी है और हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करके सतत विकास की ओर बढ़ना चाहिए। सभी ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली।

कार्यक्रम में परियोजना प्रबन्धक संदीप पवार, क्लस्टर लीडर ज्ञानसिंह यादव, टीम सदस्य डी.एल.बैरागी, पुरुषोत्तम मीना, हरिओम पटेल, नितेन्द्र पवार, ग्राम पंचायत फरसरपुरा के सचिव देवीसिंह ओसारी, आजीविका मिशन धरमपुरी से नितेश राठोर, पथ प्रदर्शक भीम सिंह डिडोर, ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष अमीचन्द, भरत आदि उपस्थित रहे।

टीएसीसी लिमिटेड, सिरसोदा, देवास में विश्व पर्यावरण दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया

देवास। द एडवांस्ड कार्बन कंपनी लिमिटेड (टीएसीसी लिमिटेड) में विश्व पर्यावरण दिवस कारखाना परिसर में पौधारोपण कर के मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परियोजना उपाध्यक्ष अनुप नायर ने की। इस अवसर पर डॉ.सतीश सैनी (वरिष्ठ प्रबंधक-ईएचएस) ने अपने उद्बोधन में कार्यस्थल व आसपास पर्यावरण के प्रति दायित्व, संरक्षण एवं सकारात्मक प्रयासों को अपनाते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगो का आह्वान किया। इस अवसर पर शैलेन्द्र पचौरी (सिविल वरिष्ठ प्रबंधक) , उमाकांत गुप्ता (सुरक्षा मैनेजर) और मोहित दशोरा (कार्यकारी - ईएचएस) द्वारा दैनिक पर्यावरण के महत्व को समझाया एवं पर्यावरण प्रबंधन के सिद्धांतों को दैनिक दिनचर्या में अपनाने की सलाह दी। इस अवसर पर पक्षियों के लिए परिंडे बांधे गए और पर्यावरण संरक्षण जागरुकता

के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। पलक मांझी द्वारा पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन चेतन पाटीदार ने किया। कार्यक्रम में अतुल यादव, एल.एन. श्रीवास ,राजेश मलिक, अबिनाश राउत्रे , अमरजीतसिंह, अनुभव जॉन, समीर , मनीष पटेल, रितिक राठौड़, हरेंद्र सिंह सैंधव, अमित, रूपेश, रवीन्द्र ,सावन, एवं गौरव उपस्थित थे।

जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुनर्जीवन हेतु नमामि गंगे अभियान 5 जून से आरंभ

मीठा तालाब पर महापौर एवं सभापति ने किया श्रमदान

देवास। जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पुर्नजीवन हेतु 5 जून से 15 जून तक निगम सीमा क्षेत्र में स्थित तालाब, कुए, बावड़ी, जलाशयों की सफाई कर उन्हें पुर्नजीवित किया जा सके। शासन निर्देशानुसार इस हेतु

नमामि गंगे अभियान की शुरूआत 05 जून बुधवार से महापौर गीता दुर्गेश अग्रवाल एवं निगम सभापति रवि जैन की उपस्थिति में निगम अधिकारी एवं कर्मचारियों तथा सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी एवं एनसीसी के छात्र एवं छात्राओं के साथ मीठा तालाब पर स्वच्छता अभियान चलाया जाकर शुरूआत की गई।

महापौर गीता दुर्गेश अग्रवाल ने बताया कि जल संरक्षण हेतु जल स्त्रोतों को बढ़ावा दिये जाने हेतु शहर में कुए, बावड़ी, तालाब जो स्थित हैं उनकी नमामि गंगे अभियान के तहत स्वच्छता अभियान चलाया जाकर जल स्त्रोतों के पुर्नजीवन हेतु प्रतिदिन वार्डों में स्थित कुए बावड़ी आदि की सफाई की जावेगी जिससे जल स्त्रोतों को बढ़ावा मिलेगा।

स्वच्छता अभियान आरंभ के दौरान सभापति रवि जैन ने बताया कि नमामि गंगे अभियान एवं विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में जल स्त्रोतों को बढ़ावा एवं पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से स्वच्छता अभियान आरंभ कर शहर में स्थित कुए, बावड़ी, तालाब आदि की प्रतिदिन वार्डों में निगम अधिकारी, कर्मचारी एवं जनप्रतिनिधियों तथा सामाजिक संस्थाओं के साथ कार्य कर जल स्त्रोतों को पुर्नजीवित किया जावेगा। इस अवसर पर शहर में स्थित मीठा तालाब पर स्वच्छता अभियान आरंभ में महापौर एवं सभापति के साथ उपस्थित अधिकारी, कर्मचारी एवं संस्थाओं के पदाधिकारी गण् एवं छात्र छात्राओं ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर श्रमदान किया। श्रमदान के दौरान उपस्थित गणों के द्वारा जल संरक्षण एवं पर्यावरण की सुरक्षा एवं प्रति वर्ष एक पौधा लगाने तथा उसका संरक्षण करने की शपथ भी ली। इसी आयोजन के तहत वार्ड क्र 27 में वार्ड पार्षद प्रतिनिधि आबिद खान एवं निगम उपायुक्त श्रीमती पिपलोनिया, उपयंत्री श्री जाधव के साथ वार्ड के रहवासियों के द्वारा पौधा रोपण भी किया गया। प्रतिदिन वार्डों में नमामि गंगे अभियान के तहत स्वच्छता अभियान में विभिन्न गतिविधि निगम द्वारा आयोजित की जावेगी ।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पीजी कॉलेज में आयोजित हुआ कार्यक्रम

धार। पीजी कॉलेज धार में वनस्पति शास्त्र विभाग एवं महाविद्यालय की आई.क्यू.ए.सी. सेल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। संस्था प्रमुख डॉ एसएस बघेल ने कहा कि पर्यावरण को बचाना एवं संतुलित रखना हर मानव का कर्तव्य होना चाहिए। हर वर्ष यह याद ना दिलाना पड़े कि पर्यावरण है तो हम हैं हमारे आसपास के वातावरण को शुद्ध रखने के लिए बिना कहे पेड़ पौधे लगाना अनिवार्य है। इसके लिए किसी को प्रेरित करने की आवश्यकता नहीं स्वयं प्रेरणा से पौधे लगाना चाहिए। इसी अवसर पर सभी को हरित शपथ भी दिलवाई गई। सुनील पाठक ने विश्व पर्यावरण दिवस पर यू एन ई पी द्वारा घोषित थीम -मृदा बहाली मरुस्थलीकरण और सुखे से

निपटने की क्षमता विषय पर विषय पर पीटीटी के माध्यम से छात्र-छात्राओं को वर्तमान परिपेक्ष में पर्यावरण कितना दूषित हो गया है और मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए हमें क्या-क्या प्रयास करना चाहिए सुखे से निपटने के लिए हमें क्या-क्या प्रयास करना चाहिए के बारे में बताया। साथ ही डॉक्टर सुनील पाठक ने अपने घर पर रोपित छोटे फूलों के पौधों को छोटे-छोटे पॉट में तैयार कर छात्र-छात्र एवं अतिथियों को प्रदान किए।

संचालन करते करते हुए डॉक्टर एन एस सोलंकी ने बताया कि यदि जिंदा रहना है तो आपको पर्यावरण संरक्षण और साथ ही साथ उसका संतुलन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सब प्रकार की लालच को छोड़कर शुद्ध अंत:करण से स्वच्छ मन को लेकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में काम करना अनिवार्य है अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य भी इस धरती से लुप्तप्राय हो जाएगा। डॉ प्रभा सोनी ने क्विज प्रतियोगिता के लिए क्यूआर कोड को लांच किया और विभाग के छात्र दर्शन गिरवाल, सुमित भवेल एवम छात्रा ज्योति चौहान, भारती ने अपने विचार व्यक्त करे एवम सभी को आने वाले समय में पोधा रोपण हेतु प्रेरित किया सहभागिता के लिए प्रेरित किया, साथ ही साथ यह भी कहा कि पर्यावरण को व्यवस्थित और बैलेंस बनाए रखना बहुत जरूरी है नही तो हमारा जीवन भी खतरे में पड़ जायेगा।

राइट क्लिक

क्या मोदी वास्तविक गठबंधन सरकार को चला ले जा पाएंगे?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

लोकसभा चुनाव के झटकेदार नतीजों के कारणों का विश्लेषण राजनीतिक प्रेक्षक लगातार कर रहे हैं, पर इन कारणों में भी गजब का विरोधाभास है। बीजेपी के अपने दम पर बहुमत से काफी दूर रह जाने और कांग्रेस के बढ़कर दो गुना हो जाने का कोई ठोस कारण किसी को समझ नहीं आ रहा। क्योंकि देश में अलग-अलग पॉकेट्स में अलग-अलग तरह की हवा ज्यादा दिखी। जो फैक्टर यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, हरियाणा, मणिपुर व राजस्थान में भाजपा की अकड़ तार- तार करते दिखे, वही फैक्टर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल और उत्तराखंड में भाजपा को मजबूत करते दिखे। भाजपा ने इसे अपनी नीतियों और जनता के विश्वास की जीत कहा तो विपक्ष ने इस जीत को मोदी व भाजपा की नैतिक हार बताकर उनसे इस्तीफा मांगा। बहरहाल इतना तो तय है कि देश में फीकी चमक के साथ ही सही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार एनडीए गठबंधन की सरकार बनने जा रही है। यहां असल सवाल यह है कि क्या मोदी ऐसी सरकार को पांच साल तक चला ले जा पाएंगे? ये सवाल इसलिए भी मौजूं है क्योंकि मोदी की कार्य शैली मूलतः सर्वसत्तावादी और आत्म केन्द्रित रही है। ऐसे में गठबंधन धर्म निभाते हुए सरकार को सहेजकर चलाना आसान नहीं है। इस देश में गठबंधन धर्म की ईजाद अटलजी ने की थी। क्या मोदी स्वयं में ऐसा कोई बदलाव करने के लिए तैयार हैं, खासकर तब कि जब वो अब स्वयं को परमात्मा का प्रतिनिधि मानने लगे हैं और सत्ता संचालन को ईश्वरीय कार्य।

दरअसल 18 वीं लोकसभा के लिए हुए आम चुनाव में जनता ने किसी भी एक पार्टी के बजाए एक गठबंधन के पक्ष में जनादेश दिया है। इसी के साथ देश 26 साल पुराने फिर गठबंधन सरकारों के उस दौर में पहुंच गया है, जब चुनाव से पूर्व बना समान विचारों अथवा राजनीतिक स्वार्थों वाले दलों का एक गठबंधन सत्ता में आता था तो दूसरा गठबंधन ही उसे सत्ता से बेदखल करता था। गठबंधन सरकार की अपनी हाथी की चाल होती थी। समन्वय, समझौतों, विवादों के साथ साथ विभेदक तथा दबंगई भरे मुद्दों को कालीन के नीचे सरकाते हुए सरकार चलानी होती थी। चाहे एनडीए 1 व 2 हो या फिर यूपीए 1 व 2 हो, सभी सरकारें तकरीबन उसी तरीके से चली हैं। इसके कुछ फायदे थे तो कुछ नुकसान भी थे। फायदे ये थे कि ये सरकारें अमूमन अपना वजूद बचाने के लिए उन्हीं मुद्दों पर हाथ डालती थीं, जिनमें न्यूनतम राजनीतिक खतरे होते थे। नुकसान ये था कि किसी भी गंभीर मसले पर साहसिक निर्णय लेना इनके लिए मुश्किल था। यही कारण था कि परमाणु बम विस्फोट, शाइनिंग इंडिया, भाईचारे की और पाकिस्तान से दोस्ती करने वाली अटलजी की सरकार भी आठ साल बाद आश्चर्यजनक ढंग से अचानक विदा हो गई तो उसकी जगह अर्थशास्त्री डॉ.मनमोहन सिंह के नेतृत्व में आई यूपीए सरकार रोजगार, आर्थिकी और गरीबों की बात करते-करते बुरी तरह सत्ता से बेदखल हुई। उस सरकार में जनता के प्रति प्रतिबद्धता तो थी, लेकिन जनमन को रिझाने वाले फैसले लेने की राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं थी।

भाजपा ने 2014 में नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार घोषित कर नया दांव खेला। मोदी ने जनता में उम्मीदें जगाईं और स्वर्णिम भारत का सपना दिखाया। मोदीजी ने कई साहसिक (जिन्हें दुस्साहसिक भी माना गया) फैसले किए, उन्हें लागू भी किया। 'सबका साथ' के नारे के साथ उन्होंने वोटों की धार्मिक गोलबंदी भी पुख्ता की। अयोध्या में विवादित बाबरी मस्जिद की जगह राम मंदिर निर्माण का फैसला अदालत से करवाकर मंदिर को साकार किया। नोटबंदी लागू की, जीएसटी लागू किया। तीन तलाक पर कानून बनाकर मुस्लिम महिलाओं का भला किया तो दूसरी तरफ मुसलमानों को नाराज भी किया। भाजपा और आरएसएस का कोर एजेंडा कश्मीर से धारा 370 हटाई तो पड़ोसी देशों में रहने वाली गैर मुस्लिमों को भारत की नागरिकता देने सीएए कानून बनाया। इसके बाद उनका इरादा समान नागरिक संहिता लागू करने का था। लेकिन यह मामला अब अधर में लटक सकता है। कुल मिलाकर यह छवि बनाई गई कि मोदी सिर्फ कहते ही नहीं, वैसा करते भी हैं। उन्होंने अपनी एक वैश्विक छवि भी बनाई साथ में अपने कट्टर हिंदू होने का संदेश भी हर पल दिया। उनके कई फैसलों से लोगों को कष्ट भी हुआ, लेकिन व्यापक हितों के संदर्भ में दस साल तक जनता मोदी को खुले मन से सपोर्ट करती रही। बावजूद इस हकीकत के कि मोदी सारा कुछ खुद ही करते हैं। वही प्रधानमंत्री हैं और मंत्री भी हैं और सचिव भी। वही संगठन के भी नियंता हैं और वही भारत के एकमेव भाग्य विधाता हैं, जिनकी नीयत पर संशय करना भी पाप है। मोदी की यह कार्यशैली विपक्ष तो छोड़िए खुद भाजपाइयों पर भी भारी पड़ने लगी थी। सत्ता और संगठन में उनका वजूद शो पीस से ज्यादा नहीं रह गया था। भाजपा व संघ का विचार मानो मोदी का विचार बन गया और पार्टी व संघ की सोच मोदी की सोच तथा गारंटी में तब्दील हो गई। 'हम' की भाषा पूरी तरह 'मैं' और उससे भी आगे सिर्फ 'मोदी' में तब्दील हो गई। प्रधान सेवक का परम पिता के रूप में यह रूपातरंण जनता देख रही थी। कुछ को उसमें देवत्व दिख रहा था तो कुछ की नजर में यह दानवत्व का बीज था।

लगता है कि विवेकशील मतदाता ने देवत्व और दानवत्व की लक्ष्मण रेखा को भांप लिया और लोकसभा चुनाव में मोदी को तीसरी बार सत्ता सौंपकर भी अंकुश अपने हाथ में रख लिया। मतदाता के मन में एक बड़ा भय लोकतंत्र के अनिष्ट का था। जनतांत्रिक व्यवस्था के अधिनायकत्व में बदलने की आशंका का था। इसमें आंशिक सच्चाई थी तो काल्पनिक आशंकाएं भी थीं। जैसे कि संविधान बदलकर देश को आजादी के पहले वाले दौर में ठेल देने की कोशिश, आरक्षण समाप्त करने का डर, समूची सत्ता अमीरों के हाथ में दे देने का भय, प्रतिरोध के हर स्वर को खामोश कर देने का डर तथा भौतिक विकास को ही सर्वस्व मान लेने का भ्रम भी शामिल था। अर्थव्यवस्था उड़ रही थी, गरीब का दिल बैठा जा रहा था। हिंदू एकता के नारे में जातीय और क्षेत्रीय अस्मिता और अधिकारों के खो जाने डर भी शामिल था। एक सुदृढ़ और विकसित भारत सभी देखना चाहते हैं, लेकिन किस कीमत पर और किसके लिए, इस पर मतभेद साफ उभर आए। यह संदेश जाने लगा कि मोदी उस तेज भागते इंजन की तरह हैं, जिसे पीछे चलने वाले डिब्बों की फिकर ही नहीं है। हालांकि मोदी ने ऐसी आशंकाओं को निराधार बताते हुए कई बार इसका खंडन भी किया। लेकिन संदेह के बादल आखिर तक छंट नहीं पाए। सबसे बड़ा कारण तो संवादहीनता थी। भारतीय लोकतंत्र के 70 साल के इतिहास में ये पहले 10 साल थे, जब सत्ता पक्ष और विपक्ष में संवाद और समन्वय न्यूनतम स्तर पर था। यह धारणा बनी कि मोदी खुद ही फैसले लेकर बाकी लोगों को न्यायाधीश की तरह सुना देते हैं। सारी शक्तियां पीएमओ में सिमट गई थीं। मंत्री के पास फाइल पर चिड़िया बिठाने से ज्यादा कुछ बचता नहीं था। यह स्थिति भी उस लोकतांत्रिक शासन के अनुरूप नहीं थी, जिसकी कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी।

ऐसा नहीं है कि मोदी पर से पूरे देश का विश्वास उठ गया है। क्योंकि जिस संविधान के बदलने और आरक्षण खत्म होने का डर यूपी, बिहार, महाराष्ट्र या और कुछ दूसरे राज्यों के ओबीसी दलितों और आदिवासियों को सता रहा था, वह मप्र सहित चार राज्यों के दलित आदिवासियों को नहीं लगा। उल्टे मप्र सहित चार राज्यों में भाजपा के प्रति इन वर्गों का समर्थन और मजबूत हुआ। वैसे भी संविधान किसी विशेष राज्य या जाति के लिए नहीं बदला जा सकता।

मतदाता की खूबी यह है कि वह सत्ताधीशों के मन और नीयत को भी पढ़ लेता है। लेकिन मतदाता का शक यदि दूर न हो तो वह चुनाव में पुरस्कार या तिरस्कार के रूप में परिणत होता है। शायद इसी संभावित भय ने पूर्ण बहुमतवाली पार्टी की सरकार को अपूर्ण बहुमत वाले दल की गठबंधन सरकार में तब्दील कर दिया। यूं कहने को तो 2014 व 2019 में भी एनडीए गठबंधन की ही सरकारें थीं, लेकिन उसका समूचा नियंत्रण मोदी और भाजपा के हाथ में था। अब वैसा नहीं हो सकेगा। अगर एनडीए की सरकार पांच साल चलनी या चलानी है तो संवाद को प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर तथा पारदर्शिता को दूसरे नंबर पर रखना होगा। अपने पूर्वाग्रह थोपने की जगह सबकी राय से काम करना होगा। बीते दस सालो में मोदी सरकार के कई निर्णय ऐसे थे, जिन पर फैसले से पहले ही यदि परस्पर संवाद कर आम सहमति बनाने की कोशिश की गई होती तो विवाद ही नहीं होते। तीसरा, विपक्ष का सम्मान किए बगैर सरकार चलाना नामुमकिन होगा। यह जताना होगा कि विपक्ष के केवल एक संवैधानिक प्रावधान भर नहीं है, लोकतंत्र की एक जीवंत आवश्यकता है। न सिर्फ विपक्ष बल्कि स्वयं भाजपा के अन्य नेताओं और सहयोगी दलो को भी पूरा सम्मान देना होगा, वरना कब कौन समर्थन वापस लेकर सत्ता की जाजम खींच ले, कहा नहीं जा सकता। लेकिन यह सब करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को ज्यादा उदार, सहिष्णु और विकेन्द्रीकृत सत्ता का हामी होना पड़ेगा। संक्षेप में कहें तो उन्हें अटल बिहारी वाजपेयी की शैली में काम करना होगा (उनकी गलतियों को छोड़कर)। क्या मोदी ऐसा कर पाएंगे, यह लाख टके का सवाल है? और इसी के साथ मोदी 3.0 पर प्रश्नचिन्ह भी!

कमलनाथ कार्यकर्ताओं के बीच हुए भावुक

- छिंदवाड़ा में बोले- जनता ने फैसला किया है, स्वीकार है; हमेशा आपके साथ रहूंगा

छिंदवाडा (नप्र)। लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के दूसरे दिन छिंदवाड़ा पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने बेटे नकुलनाथ की हार पर कहा, 'जनता ने फैसला किया है, स्वीकार है।' पूर्व सीएम ने कांग्रेस पदाधिकारियों - कार्यकर्ताओं के साथ हार की समीक्षा की। होटल करण में सभी विधायकों को और कांग्रेस संगठन की बैठक लेते हुए कमलनाथ ने भावुक बयान दिया। उन्होंने कहा, मेरा और आपका राजनीतिक संबंध नहीं, पारिवारिक संबंध है। छिंदवाड़ा की जनता ने मुझे जो विदाई दी है, वह मुझे स्वीकार है। कमलनाथ का कहना था कि वही भूमिका रहेगी, जो अब तक थी। कमलनाथ ने कार्यकर्ताओं से कहा, दिल्ली की बैठक छोड़कर छिंदवाड़ा आए हैं, सिर्फ यह कहने के लिए कि जो परिणाम सामने आए हैं, उसका किसी को विश्वास नहीं था। हमें ही इस परिणाम का पोस्टमॉर्ट्म करना है, कोई दूसरा नहीं करेगा। मेरा और आपका संबंध हमेशा बना रहेगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से सीधे तौर पर संवाद करते हुए कहा, जिसे जो शिकायत होगी, वो सीधे तौर पर मुझे करें, मुझे मेल भी कर सकते हैं।

कमलनाथ बोले- अकेले छिंदवाड़ा नहीं, प्रदेशभर में हार हुई, समीक्षा करेंगे: कमलनाथ ने कहा, अकेले छिंदवाड़ा सीट की बात नहीं है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस की बड़ी हार हुई है, इसकी समीक्षा करेंगे। देशभर में हमारे गठबंधन के अच्छे परिणाम आए हैं। मोदी जी कहते 300-400 पार, 240 पार ही हो पाए।

भोपाल-ग्वालियर समेत 33 जिलों में आंधी-बारिश हुई

- खंडवा में 24 घंटे में 3.6 इंच पानी गिरा; निवाड़ी, दतिया में लू का असर

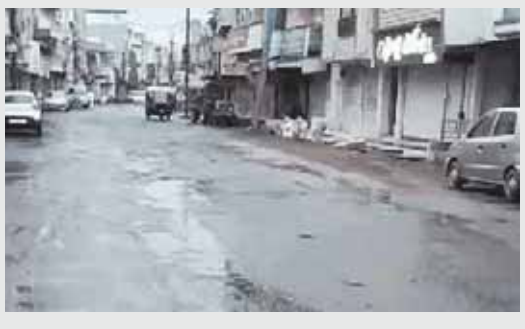

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मौसम बदल गया है। पिछले 24 घंटे में कहीं तेज आंधी चली तो कुछ जिलों में बारिश हुई। भोपाल, ग्वालियर समेत 33 जिलों में पानी गिरा। खंडवा में 3.6 इंच बारिश हुई। वहीं, निवाड़ी, दतिया समेत कई शहरों में लू का असर है।

मौसम विभाग भोपाल के अनुसार- प्रदेश के 32 जिलों में लू, आंधी-बारिश का अलर्ट है। पिछले 24 घंटे में भोपाल, नर्मदापुरम, बैतूल, शाजापुर, आगर-मालवा, देवास, इंदौर, धार, बड़वानी, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, जबलपुर, शहडोल, अनूपपुर, सागर, दमोह, छतरपुर, सतना, पन्ना, रीवा, सीधी, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, श्योपुर, ग्वालियर और भिंड में बारिश हुई। यहां आंधी भी चली। इससे पहले मंगलवार को पृथ्वीपुर सबसे गर्म रहा। यहां दिन का टेम्प्रेचर 46.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। भोपाल के मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया, मानसून अपनी गति से आगे बढ़ रहा है।

जबलपुर में रेलकर्मी ने परिवार समेत सुसाइड किया

पत्नी और दो बेटियों के साथ ट्रेन के सामने कूदा; पारिवारिक विवाद बनी वजह

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में बुधवार सुबह रेलवे कर्मचारी ने पत्नी और दो बेटियों के साथ सुसाइड कर लिया। पूरे परिवार ने ट्रेन के आगे आकर खुदकुशी की। घटना भेड़ाघाट थाने की है।

नरेंद्र चढ़ार (32) रेलवे में ग्रुप - डी कर्मचारी (चाबीदार) थे। पत्नी रीना चढ़ार (26) के साथ उन्होंने बेटी सानवी (6) और मानवी (3 महीने) के साथ आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि पारिवारिक विवाद में रेलकर्मी ने यह कदम उठाया है। जीआरपी और भेड़ाघाट थाने की पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस के मुताबिक, घटना भेड़ाघाट रेलवे स्टेशन से नजदीक की है। चारों के शव कटे हुए मिले थे। घटनास्थल से थोड़ी दूर बाइक भी मिली है। रेलकर्मी सिहोदा गांव में रहते थे।

मां बोलीं- सुबह बाइक से अकेले जाते देखा था...

रेलकर्मी दो बहनों में इकलौते भाई थे। सबसे छोटे थे। एक बहन की शादी जबलपुर के शहपुरा, दूसरी की शादी कटनी जिले में हुई है। घर में मां अकेली रह गई हैं। पिता का कई साल पहले निधन हो चुका है। रेलकर्मी की मां ने बताया कि मकान की छत पर गेहूं डाला था। इसीलिए मैं छत पर सो गई। बेटे - बहू और बच्चियां नीचे सो रहे थे। सुबह 4 बजे देखा तो बेटा अकेले बाइक से जा रहा था। वह नर्मदा नहाने जाया करता था, इसलिए तब यही लगा। सुबह 7 बजे उठी तो देखा कि घर से बहू और बच्चियां भी गायब थे।

साथी कर्मचारी राजेंद्र मरावी ने बताया कि नरेंद्र के चेहरे पर कभी परेशानी नहीं दिखी। बड़े पिता जवाहरलाल का कहना है कि कभी बेटे-बहू में झगड़े की बात नहीं सुनी।

साथी कर्मचारी बोले- सभी के साथ हंसते - बोलते थे नरेंद्र...

साथी कर्मचारी रेलवे ट्रैकमेन राजेंद्र मरावी ने बताया, नरेंद्र सभी से हंसकर बात करते थे। खुशहाल व्यक्तित्व था। साफ और सुलझे हुए थे। उनके चेहरे पर कभी परेशानी और शिकन नहीं देखी।

बड़े पिता जवाहरलाल चढ़ार ने बताया, कभी बेटे-बहू में लड़ाई - झगड़े जैसी कोई बात नहीं सुनी। समझ नहीं आ रहा कि ऐसा कदम क्यों उठाया? 3 जून को ही गांव आरछा आया था। हमारी बातचीत हुई, दिनभर रहा, शाम को जबलपुर लौटा था।

जबलपुर में खदान धंसी, 7 मजदूर दबे

रेत से 3 मजदूरों के शव निकाले गए, 3 घायल; 1 लापता

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में रेत की अवैध खदान धंसने से महिला समेत तीन लोगों की मौत हो गई। घटना गोसलपुर थाना इलाके के कटरा रमखीरिया गांव की है। यहां मजदूर बरनू नदी के किनारे खदान से रेत निकाल रहे थे। सभी मृतक कटरा के रहने वाले हैं। बुधवार सुबह 11.30 बजे सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। एक मजदूर लापता है। जेसीबी की मदद से उसकी तलाश की जा रही है। बताया जा रहा है कि दिन्नू खटीक यहां मजदूर लगाकर 20 फीट गहरी खदान से रेत निकलवा रहा था। एएसपी सोनाली दुबे ने कहा कि मौके पर रेत का अवैध उत्खनन हो रहा था।

इनकी मौत हुई

- मुकेश (35) पिता जगन खटीक
- मुन्नी बाई (38) पति जगन बसोर
- राजकुमार (29) पिता कैलाश खटीक

ये हुए घायल

- खुशबू (25) पति विनोद
- सावित्री (35) पति अनु बसोर
- चांदनी (20) पिता राजू बसोर

महाकाल मंदिर में वेंटिलेशन से कूदे दर्शनार्थी

वीडियो सामने आने के बाद मंदिर समिति ने वेंटिलेशन तत्काल बंद करवाया

उज्जैन (नप्र)। महाकाल मंदिर में दर्शानार्थियों का वेंटिलेशन से कूदते हुए वीडियो सामने आया। मंदिर में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। मंदिर में निजी एजेंसी के सुरक्षा गार्ड, मंदिर के कर्मचारी और पुलिस के जवान तैनात रहते हैं। सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाती है। वीडियो दो दिन पुराना बताया जा रहा है। वीडियो के वायरल होने के बाद महाकाल मंदिर समिति ने तत्काल वेंटिलेशन को बंद करवा दिया है। शॉर्टकट

के चक्कर में दर्शनार्थी वेंटिलेशन से कूदते नजर आए। कार्तिकेय मंडपम से कूदकर गणेश मंडपम में आए महाकाल मंदिर से जुड़ा यह वीडियो कार्तिकेय मंडपम का बताया जा रहा है।

नकुल का बयान -बोरिया, बिस्तर लेकर नहीं जाऊंगा

कार्यकर्ताओं से बोले- अगला लक्ष्य अमरवाड़ा विधानसभा चुनाव, कांग्रेस जिला अध्यक्ष का नाथ ने ठुकराया इस्तीफा

छिंदवाडा (नप्र)। चुनाव हारने के बाद कार्यकर्ताओं की बैठक में पहुंचे छिंदवाड़ा के पूर्व सांसद नकुलनाथ ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को लोकसभा चुनाव में साथ देने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सब ने जो साथ दिया उसका धन्यवाद। नकुलनाथ ने कहा कि हमारा अब अगला लक्ष्य अमरवाड़ा विधानसभा चुनाव है। अमरवाड़ा चुनाव में जब हम जीतेंगे तब मैं समझूंगा कि आप सब ने अपना फर्ज

अदा कर दिया। इससे पहले नकुलनाथ ने कहा कि जिस तरह से 40 सालों से आपने हमारे परिवार का साथ दिया है आगे भी हमारा राजनीतिक रिश्ता नहीं पारिवारिक रिश्ता रहेगा।

बोरिया,बिस्तर बांध के जाऊंगा नहीं आऊंगा: नकुलनाथ ने कहा कि वह बोरिया बिस्तर छोड़कर कहीं नहीं जाने वाले वे दिल्ली जाएंगे लेकिन दोबारा लौट कर आएंगे अगला लक्ष्य अमरवाड़ा विधानसभा क्षेत्र रहेगा।

पूर्व प्रेमिका ने दोस्तों से कराई थी प्रेमी की हत्या

- सागर में पार्टी के बहाने चंदिया डेम पर ले गए, कटर से काटा था गला, तीन गिरफ्तार

सागर (नप्र)। सागर में शाहगढ़ थाना क्षेत्र के चंदिया डेम पर की गई युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने युवती समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। युवती मृतक की पूर्व प्रेमिका है। उसने बदला लेने के लिए अपने दो दोस्तों से मृतक विक्रम की हत्या कराई थी। मामले में पुलिस ने तीनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पुलिस के अनुसार 24 मई की शाम विक्रम पिता शंकर सिंह बुंदेला उम्र 20 साल निवासी मड़देवरा थाना बकस्वाहा घर से बस स्टैंड जाने का बोलकर निकला था जो वापस लौटकर नहीं आया। परिवार वालों ने 25 मई को बकस्वाहा थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई। जिसके बाद से पुलिस विक्रम की तलाश कर रही थी। मोबाइल लोकेशन निकाली गई। लोकेशन शाहगढ़ थाना क्षेत्र के अमरमऊ स्थित चंदिया डेम की मिली थी। पुलिस टीम 2 जून को चंदिया डेम

पहुंची और सर्चिंग शुरू की। इसी दौरान नहर में युवक का शव मिला। मृतक के शरीर पर चोटों के निशान थे। पुलिस ने मामले में हत्या समेत अन्य धारा में प्रकरण दर्ज कर जांच में लिया। जांच करते हुए मृतक और संदेहियों के मोबाइल नंबरों की डिटेल निकाली गई। वहीं मुखबिर तंत्र सक्रिय किया गया। जांच के दौरान पुलिस ने संदेही प्रादर्श पटेल और भीकम घोषी निवासी अमरमऊ को हिरासत में लिया। साथ ही मृतक की पूर्व प्रेमिका अंजली बुंदेला को पकड़ा। थाने लाकर पूछताछ की गई। पूछताछ में आरोपियों ने अपना जुर्म कबूल लिया है।

चंदिया डेम से नीचे पटका, कटर से रेता था गला: शाहगढ़ थाना प्रभारी अर्चना सिंह ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ में सामने आया कि मृतक विक्रम सिंह की पूर्व प्रेमिका अंजलि ने इंस्टाग्राम पर मैसेज करते हुए आरोपी प्रादर्श पटेल से कहा था कि विक्रम को जान से मारना है। जिसके बाद प्रादर्श ने 24 मई को फोन लगाकर मृतक विक्रम को पार्टी के बहाने ग्राम अमरमऊ बुलाया। जहां से अपने दोस्त भीकम घोषी के साथ प्रादर्श और विक्रम पार्टी करने के लिए चंदिया डेम चले गए। चंदिया डेम पर पार्टी के दौरान उनके बीच बहस हुई। इसी दौरान प्रादर्श ने विक्रम को चंदिया डेम के ऊपर से धक्का देकर नीचे पटक दिया। जिससे वह गंभीर घायल हुआ। इसी दौरान आरोपी प्रादर्श ने कटर से विक्रम के गले और सिर पर वार किए। आरोपी भीकम ने गला फाड़ दिया। मौत होने पर दोनों आरोपियों ने वारदात को छिपाने के लिए मृतक विक्रम का शव डेम की नहर में छिपा दिया और भाग गए थे। मामले में पुलिस ने आरोपी प्रादर्श पटेल, विक्रम घोषी और अंजलि बुंदेला निवासी अमरमऊ को गिरफ्तार कर लिया है। न्यायालय में पेश कर आरोपियों को जेल भेज दिया गया है।

मृतक ने किया था प्रेम विवाह, उसी का बदला लेने कराई हत्या: मृतक विक्रम और आरोपी अंजली के बीच पूर्व में प्रेमप्रसंग था। लेकिन कुछ समय पहले मृतक विक्रम ने दूसरी लड़की से प्रेम विवाह कर लिया था।